हिन्दी विद्यापीठ ग्रन्थमाला-चतुर्थ पुष्प

हमारे काव्य निर्माता

०, साहित्यरत्न

※ भूमिका ※

विद्यापीठ का यह चतुर्थ पुष्प प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है। प्रारंभ में पं० रामनारायण जोशी का कवियों का एक आलोचनात्मक परिचय प्रकाशित करने का विचार था। लेखों की कुछ रूपरेखा भी उन्होंने तैयार की परन्तु वे विशेष कार्यवश फिर आगे कुछ नहीं लिख पाये। इसी बीच एक दिन अचानक वे एक प्रकाश पुञ्ज की भांति चल बसे।

मन का संकल्प मन ही में रह गया, यह मुझे पता था। इधर विद्यार्थियों की मांग बढ़ रही थी। उन्हें काव्य का सम्यक् अध्ययन करने के लिए विभिन्न आलोचनात्मक पुस्तकें टटोलनी पड़ती थी। फिर भी उनका अध्ययन पूरा नहीं हो पाता था ? इसी से प्रभावित होकर यह ग्रन्थ लिखा गया है। जैसा जो यह है यह आपके सामने है।

इस पुस्तक में हिन्दी साहित्य की प्रगति का एक रोचक इतिहास आप को मिलेगा। काव्य के विभिन्न अंगों पर भी समुचित प्रकाश डाला गया है। साथ ही प्रमुख काव्यकारों का जीवनवृत्त, काव्य-मीमांसा एवं आलोचना भी दी गई है। तुलनात्मक आलोचना प्रणाली का एक निखरा हुआ रूप भी आपको इसमें मिलेगा। सरल और चलती हुई भाषा विद्यार्थियों को विषय हृदयङ्गम करने में काफी मदद करेगी ऐसी आशा है।

इस अवसर पर मैं प्रिय बन्धु श्री सत्यनारायण गोयन्दका, जो इस समय बर्मा में व्यापारिक क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, नहीं भुला सकता। दक्षिणी पूर्वी एशिया के व्यापारिक कार्यों में अत्यधिक संलग्न रहते हुए भी आपने बड़ी सहृदयता से हमारे इस शुभ संकल्प को पूरा करने में सहयोग दिया।

—लेखक

अनुक्रम

काव्य क्या है ?

काव्य लोकोत्तर आनन्द का एक वेगशील प्रवाह है। यह आनन्द और सौन्दर्य की अभिसन्धि है। यह अतीत एवं वर्तमान को एकता के सूत्र में पिरोने वाला एक मौलिक शृंखलाबद्ध तारतम्य है। यह जीवन का आत्मप्रकाश और "सत्यं शिव सुन्दरम्" का मूर्तरूप है। यह युगान्तर के चिन्तार्णव का तपा हुआ नवनीत है।

जिस मानव समाज ने अपने स्वाभिमानपूर्ण अतीत की भावनाओं को विदलित और पददलित करवा डाला है। उसे कर्तव्य प्रेरक आह्वान की हुंकार से विलुप्त गौरव के प्रतिष्ठापूर्ण पद पर पुनः प्रतिष्ठित कराने वाला यदि कोई है तो वह समाज का समुज्ज्वल काव्य साहित्य ही है। किसी भी देश, किसी भी जाति की गहरी नींव इसी के बल पर पड़ती है।

काव्य भाव-जगत् की उपज है। इतिहास केवल स्थूल घटनाओं का वर्णन करता है किन्तु काव्य-समाज की सूक्ष्मातिसूक्ष्म विचारधाराओं पर प्रकाश डालता है। किसी देश की

सभ्यता, किसी देश की संस्कृति उसके काव्य-साहित्य के अध्ययन करने से ही विदित हो सकती है। जो देश जितना उन्नत होगा उसका काव्य साहित्य भी उतना ही उत्कृष्ट होगा।

काव्य हमारा एक सञ्चित कोष है। इसमें बड़े बड़े विचारकों की भावनाओं और अनुभूतियों का एक सुन्दर एकीकरण होता है। वाल्मीकि, वेदव्यास, कालिदास, सूर एवम् तुलसी की अनुभूतिपूर्ण वाणी हम इसी के द्वारा सुन सकते हैं।

काव्य की मंजुल छटा को देख कर प्राणीमात्र का हृदय आनन्द विभोर हो उठता है। इसकी मधुर स्वरलहरी तन्मयता की गति में लय होकर पाठक के अधरों पर मन्द स्मिति की एक हलकी सी रेखा अंकित कर देती है। यह रेखा ज्यों ही विस्फुटित होती है। त्यों ही मन्द मुस्कराहट की आभा झलकने लगती है। यही आनन्द है यह सब सत्य है किन्तु काव्य की आन्तरिक सुन्दरता की तह तक कोई विरला ही पहुँचता है।

पुष्प के अनुपम सौन्दर्य को देख कर सबका मन प्रसन्न होता है, उसकी सुमधुर सौरभ सबके मन को मुग्ध करने वाली है, उसका मधु पराग सबके चित्त को प्रफुल्लित करता है, किन्तु उसके रस का सच्चा पारखी तो भ्रमर ही है।

प्रेम तत्त्व के मार्मिक सम्बन्ध को यही समझता है। कठोर

मे कठोर काष्ठ को क्षण भर में कुतर देने वाला यह भ्रमर जब उस सुरभिमय पुष्प की कोमल पंखुड़ियों में बन्दी होता है तो हर्ष के आवेश में अपनी सुधबुध भूल जाता है। पुष्प के अस्तित्व में वह अपना अस्तित्व मिला देता है। एकीकरण के इस भाव में वह इतना आत्म-विस्मृत हो जाता है कि उसे बन्धन का कुछ बोध नहीं रहता। यह स्थिति ही आनन्द की परम सीमा है।

काव्य ज्ञान का एक अगाध सागर है। इसमे अपरिमित अनमोल रत्न भरे हैं किन्तु उन मुक्ताओं के स्तर कहाँ २ हैं यह तो कोई विरला ही काव्य-रसिक जानता है। परन्तु इसमें कोई संशय नहीं कि इसमे जितनी अधिक तन्मयता और गहराई से डुबकी लगाई जायगी उतनी ही अधिक उन अनमोल रत्नों की थाह लगेगी।

काव्य मस्तिष्क की नहीं हृदय की वस्तु है। बाह्य जगत नहीं भाव जगत् उसका क्रीड़ाक्षेत्र है। इसी से काव्य की अभी तक कोई निश्चित परिभाषा नहीं बन सकी है। काव्य-शास्त्र के आचार्यों के इस विषय में भिन्न भिन्न मत हैं।

संस्कृत के आचार्यों ने रसात्मक वाक्य को काव्य माना है। कुछ साहित्यकार रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाले संस्कृत

वाक्य को काव्य कहते हैं। हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक स्वर्गीय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल काव्य की परिभाषा करते हुए लिखते हैं "काव्य जगत के मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण करके उसके साथ मनुष्य समाज का सामंजस्य स्थापित करता है।" बाबू श्यामसुन्दरदास काव्य का विवेचन करते हुए लिखते हैं "काव्य वह साधन है, जिसके द्वारा शेष सृष्टि के साथ मानव के रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और उसका निर्वाह होता है।

पाश्चात्य विद्वान कारलाइल के अनुसार "काव्य संगीत मय विचार है।" मैथ्यू आरनल्ड काव्य को जीवन की आलोचना के रूप में मानता है। मिल्टन के विचार में "काव्य वह कला है जिसमें कल्पना शक्ति विवेक की सहायिका होकर सत्य और आनन्द का सम्मिश्रण करती है।"

इस प्रकार पूर्वीय और पाश्चात्य साहित्यकारों की काव्य-सम्बन्धी विचारधाराओं का अध्ययन करके हम इस निष्कर्ष पर पहुँच पाते हैं कि काव्य कवि की आत्मा है और कविता उसकी कौतूहलमयी गाथा है। यह अपनी वाणी को एकदेशीय नहीं अपितु सार्वदेशीय बनाता है। उसकी विश्वारोन्मुखी विचार-धारा विश्वजनीनता लिए हुए होती है। लोकहित की मंगलमयी भावना से वह स्वर भरता है। व्यष्टि के लिए नहीं वह समष्टि के

लिए गाता है। उसकी बलवती वाणी प्राणीमात्र के हृदय को स्पर्श करने की क्षमता रखती है।

काव्य की विभिन्न धाराएँ

काव्य के दो भेद होते हैं। एक दृश्य और दूसरा श्रव्य। दृश्य काव्य वह है जो रङ्गमञ्च पर अभिनय द्वारा दिखाया जाता है। इसे रूपक भी कहते हैं। नाटक इसी रूपक का प्रमुख भेद है। जो काव्य केवल श्रवण किया जाता है उसे श्रव्य कहते हैं। इसके दो भेद होते हैं, गद्य और पद्य। गद्य के अन्तर्गत कहानी, गल्प, आख्यायिका, उपन्यास, निबन्ध आदि माने जाते हैं। पद्य काव्य के दो भेद होते हैं।

प्रबन्ध काव्य

इसमें जीवन की सम्पूर्ण घटनाओं का धारावाहिक रूप में वर्णन किया जाता है। पद्यों का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। उनके भावों की कड़ियाँ परस्पर एक दूसरे से इस प्रकार गुंथी हुई रहती है कि एक के बिना दूसरे का अर्थ पूर्ण तथा स्पष्ट नहीं हो पाता। इसमें आदि से अन्त तक केवल एक ही छन्द का प्रयोग होता है। शृंगार, वीर एवम् करुण-रस की प्रधानता रहती है। अन्य सब रस गौण होते हैं। लोक कल्याण

ी पूत भावनाओं को इसमें विशेष स्थान दिया जाता है।
की सुन्दर कथा वस्तु विश्व को एक स्थायी सन्देश देती है।
ता का सुन्दर रूप भी हमें इसमें देखने को मिलता है। इसका
यक बलवान, बुद्धिमान, विनयशील, धैर्यवान एवम् सर्वगुण-
म्पन्न होता है। इसमें बालक्रीड़ा, जल-विहार, सूर्योदय,
ध्या, युद्ध वर्णन, ऋतु, नदी एवम् पर्वत आदि का बड़ा सजीव
र्णन रहता है। मूल कथा के साथ प्रासंगिक कथाएँ भी रहती
। परन्तु उन सब कथाओं का उद्देश्य मूल कथा की सौन्दर्य
द्धि करना ही होता है। तुलसीदासजी का रामचरित मानस
ौर जायसी का पद्मावत इसके सफल उदाहरण हैं।

खण्ड काव्य

महाकाव्य की शैली पर खण्ड काव्य की रचना होती है। परन्तु इसमें पूर्ण जीवन का वर्णन न होकर खण्ड जीवन की ही एक झलक दिखाई देती है। यह खण्ड जीवन इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि पाठक की उस विषय की सम्पूर्ण शंकाओं का समाधान हो जाता है। इसकी कथावस्तु इतिहास, पुराण, रामायण, महाभारत आदि की किसी घटना अथवा माननीय जीवन के किसी महत्वपूर्ण अंग से ली जाती है। यह भी सर्ग-बद्ध शैली में लिखा जाता है।

महाकाव्य

इसमें आठ या इससे अधिक सर्ग होने चाहिए। इसका मुख्य उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होना चाहिए। इसका नायक देवता या धीरोदात्त क्षत्रिय राजा होता है। इसका उचित मात्रा में विस्तार होना चाहिए। प्रत्येक सर्ग में सामान्यतः एक छन्द ही होना चाहिए और सर्ग के अन्त में छन्द में परिवर्तन होता है। शृंगार, वीर और शान्ति रस की प्रधानता रहती है। अन्य सब रस पोषक होते हैं। काव्य का नाम नायक के नाम पर अथवा कवि द्वारा कल्पित घटना के आधार पर होता है। साकेत, प्रियप्रवास तथा कामायिनी इसके सफल उदाहरण हैं।

मुक्तक काव्य

मुक्तक उस छन्दोबद्ध रचना को कहते हैं जो अपने अर्थ की अभिव्यक्ति करने में पूर्ण स्वतन्त्र हो। इसमें वर्णित विषय का अर्थ-बोध करने में अन्य पद्यों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं। यह अपने ही में पूरा होता है। जिस विषय का इसमें वर्णन होता है। उस विषय की सम्पूर्ण शंकाओं का समाधान इसी में रहता है। मुक्तक में प्रबन्ध काव्य की तरह भावों की शृंखला एक दूसरे पद्यों में उलझी हुई नहीं रहती। इस शैली की रचना

करने वाले कवि में प्रखर प्रतिभा का होना आवश्यक है। प्रबल वेग से उमड़ती हुई भाव धाराओं पर उचित नियन्त्रण करके उन्हें शब्द समूह में बांधना आसानी का काम नहीं है। यदि प्रबन्ध काव्य प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण एक विशाल वन है तो मुक्तक काव्य कुशल माली द्वारा सजाया हुआ उपवन है जिसके काव्य कुसुमों की मधु सौरभ पाठकों को आनन्द विभोर कर देती है। रीतिकाल के महामहिम काव्यरसिकों ने इस शैली में अपने काव्यों का निर्माण किया है।

गीति काव्य

गीति काव्य वर्ण्य विषय का संगीतात्मक पद्यों में प्रतिपादन करता है। यह घटनाप्रधान नहीं भावप्रधान होता है। इसका वर्ण्य विषय भाव और अनुभूति है। भावावेश और मस्ती की अवस्था इसमें एक नवीन सजीवता उत्पन्न कर देती है। प्रधानतः संयोग और वियोग शृंगार का इसमें बड़ा मर्मस्पर्शी वर्णन हुआ है। सूर, मीरा और महादेवी वर्मा के उत्कृष्ट गीत इस काव्य के उदाहरण हैं।

गीति काव्य का उद्भव और विकास

जब से इस मानवीय सृष्टि की उत्पत्ति हुई। तब से लेकर अब तक मानव कभी किसी युग में मूक नहीं रहा। भाषा के निर्माण होने के पहले भी वह गाता था। आज की वाणी में नहीं बल्कि पक्षी जैसी वाणी में। उनके उस संगीत में शब्दों का सौन्दर्य भले ही न हो परन्तु उनकी आत्म-तृप्ति का वे पूरा साधन थे। पक्षी भी जब तन्मयता से अपने स्वर भरने लगता है तो सुनने वाले प्रतिभा सम्पन्न प्राणी भी उसकी मधुर वाणी पर मुग्ध हो जाते हैं।

गाना और रोना मानव के दो प्रकृति सिद्ध अधिकार हैं, इनकी शिक्षा लेने की आवश्यकता नहीं। वह इन्हें सीखे हुए ही पैदा होता है। अतः सिद्ध हुआ कि गाना मानव-सृष्टि के साथ ही उत्पन्न हुआ और ज्यों ज्यों सृष्टि आदर्श और सिद्धान्त की ओर बढ़ती गई त्यों त्यों गीत का स्वरूप भी बदला गया। इसकी उत्पत्ति का इतिहास बड़ा पुराना है। परन्तु लिखित रूप में गीति काव्य वैदिक काल में उपलब्ध होता है।

गीति काव्य वह काव्य है जिसके द्वारा हृदय के आन्तरिक भावों का प्रदर्शन संगीतमय ध्वनि से होता है। संगीत मस्तिष्क की नहीं हृदय की वस्तु है। इसका क्रीड़ा क्षेत्र बाह्य जगत नहीं भाव जगत है। बहुत से काव्यकारों ने गीति काव्य को संगीत-मय विचार के नाम से पुकारा है।

काव्य के बिना मानव जीवन अधूरा ही नहीं बल्कि नितान्त पङ्गु है। भर्तृहरि जैसे वीतराग महात्म ने लिखा है।

साहित्य, संगीत, कला-विहीनः साक्षात पशुः पुच्छ विषण हीनः। इस तरह हम देखते हैं कि संगीत और काव्य कला का बड़ा महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। इन में सबसे पहले गीति काव्य उद्भूत हुआ क्यों कि गीति काव्य हृदय का स्वाभाविक सगीत है।

गीत प्रकृति सुलभ वस्तु है। यह शान्ति और सुख के समय स्वतः हृदय से निकलने लग जाता है। विरह की अवस्था में हृदय का आर्तभाव इसी द्वारा मार्मिकता से व्यक्त होता है।

वैदिक काल में गीति काव्य पूर्ण विकसित हो चुका था। वेद संसार के आदि ग्रन्थ हैं ये प्रायः संसार के सभी विद्वानों ने स्वीकार कर लिया है। इन वेदों में सामवेद तो निरापम गीति काव्य है वैसे अन्य वेदों का पाठ भी गीति काव्य के ढङ्ग से ही

होता है। इसके उपरान्त वेदों के ऊपर जो कथाएँ बनीं वे गीति काव्य रूप में ही लिखी गई। चारों वेद ईश्वर और देवताओं सम्बन्धी विनय-प्रार्थनाओं से भरे पड़े हैं। वे सब गीति काव्य ही हैं।

संगीत का गीति काव्य से अभिन्न सम्बन्ध रहा है। ज्यों ज्यों लोगों का ध्यान महाकाव्यों की ओर जाता गया त्यों त्यों संगीत का यह क्रम कम होता गया।

संस्कृत में गीति काव्य का बड़ा विस्तार हुआ। महाकवि कालिदास ने मेघदूत और ऋतुश्रृंगार आदि काव्य लिखे और जयदेव ने गीत गोविन्द लिख कर इस क्षेत्र में आशातीत उन्नति की। कालान्तर में मैथिल कोकिल विद्यापति ठाकुर ने भी सुन्दर गीतों का निर्माण किया। वीरगाथा काल में भी यह धारा रुकी नहीं। आल्हा खण्ड और वीसलदेव रासो अच्छे गीति काव्य हैं जो उस समय की लोक भाषा में लिखे गये थे।

भक्तिकाल में तो इस गीत सुधा का एक सरस प्रवाह ही चल पड़ा जिसने भारतीय जनता को राम और कृष्ण के भक्ति रस में विभोर कर दिया। कबीर कवि नहीं था। परन्तु उनके हृदय के जो उद्‌गार निकले वे गीति काव्य के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। दादूदयाल, सुन्दरदास और मलूकदास आदि कवियों ने भी सरस गीति काव्य लिखे।

महात्मा सूर ने भी गीति काव्य को उन्नति की चरम सीमा पर पहुंचा दिया। एक लाख से भी अधिक गीत उन्होंने लिखे। स्वाभाविकता और सरसता उनके काव्य की सब से बड़ी विशेषता है। महात्मा तुलसीदास और नन्ददास भी उत्कृष्ट गीति लेखक हैं। विनय पत्रिका, जानकी मंगल और पार्वतीमंगल तथा गीतावली सुन्दर गीति काव्य हैं। मीरा के गीत बड़े मर्मस्पर्शी बने हैं। उनके गीतों में उनके विरह जन्य आकुलता की छाप है। सच पूछो तो मीरा ने मानवीय भावनाओं के बड़े स्पष्ट चित्र अंकित किये हैं। उनकी भाषा में कहीं शब्दों का आडम्बर दृष्टि गोचर नहीं होता। उनकी वाणी हृदय के तह तक पहुंचने की क्षमता रखती है। मीरा के गीतों जैसी वेदना अन्य कवियों में नहीं। इसी से उनके गीत अधिक लोक प्रिय बन सके हैं।

प्रसाद, निराला, पंत, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, सुभद्राकुमारी तथा बच्चन आज के सफल गीतिकार हैं।

गीति काव्य की प्रमुख विशेषताएँ

१—गीति काव्य संगीत और लय प्रधान होता है।

२—हृदय की सुकुमार और कोमल वृत्तियों का सूक्ष्म प्रदर्शन इसके द्वारा होता है।

३—वियोग की अवस्था में हृदय का आत्मभाव इसी के द्वारा
होता है।

४—गीति काव्य कलाकार के हृदय पर पड़ने वाले कल्पनात्
प्रभाव का सौन्दर्य और कलापूर्ण चित्र है।

५—हृदय की रागात्मक अनुभूति का इसके द्वारा समन्वय औ
समत्व होता है।

६—अन्तर्दर्शन और आत्म-निष्ठा गीति काव्य का मेरु द
है। इन तत्वों से शून्य गीति काव्य प्राण रहित ही है।

७—स्वर और संगीतयुक्त होने के कारण कंठस्थ करने में विशे
प्रयास नहीं करना पड़ता।

८—मात्राओं का अधिक कम होना इसमें संगीत के प्रवाह
कारण खटकता नहीं।

हिन्दी काव्य-धारा का विकास क्रम

हिन्दी उद्भव कब हुआ ? इस विषय में विभिन्न विद्वानो क
ना मत हैं। कुछ लोग हिन्दी का आरंभ सं० १७५० मे मानते
। स्व० पं० शुक्लजी ने हिन्दी का आरंभ काल १०५० से माना
। मानव एक सामाजिक प्राणी है। यह समाज में ही पनपता
लता है। मनुष्य जो कुछ सोचता या विचारता है उसे वह
णी के द्वारा बाह्य जगत् में लाता है। सुन्दर भाषा मे परिष्कृत
। वाणी होती है उसे साहित्य कहते हैं। साहित्य समाज
। प्रतिबिंब है और जैसे २ समाज में परिवर्तन होता रहा वैसे
वैसे हिन्दी साहित्य का रूप भी बदलता गया। हिन्दी साहित्य
के इतिहास के अध्ययन करते समय हमें इस बात का पूर्ण ध्यान
रखना होगा कि किस समय में कौन से नए भावों का सञ्चार
कब से और किस प्रकार हुआ ? इसी दृष्टि को ध्यान में रख कर
शुक्लजी ने ९०० वर्षों के इतिहास को ४ भागों में विभक्त किया।

१ वीरगाथा काल सं० १०५० से १३७५ तक
२ भक्तिकाल ,, १३७५ ,, १७०० ,,

३ रीतिकाल ,, १७०० ,, १९०० ,,
४ आधुनिक काल ,, १९०० ,, अब तक पहुंच

वीरगाथा काल

हिन्दी का जन्म ऐसे समय में हुआ जब कि बर्बर यवनों
भारत पर आक्रमण हो रहे थे। भारतीय राजा अपने २ संगठ
न्य अपने राज्यों की रक्षा के लिए अपने जी जान की बा
लगा रहे थे। गजनी और गोरी के आक्रमणों ने देश को ध्व
करना शुरू कर दिया था। सारा भारत छोटे २ राज्यों में विभ
था। प्रत्येक देश का शासक केवल अपने ही राज्य की चि
में था। राष्ट्रीयता का उनमें नितांत अभाव था। उनकी अद
वीरता का खजाना पारस्परिक लड़ाइयों में खर्च किया जा
था। सम्पूर्ण शक्तियों का एकीकरण करके सम्मिलित रूप
दुश्मन से मोर्चा लेने का संगठन वे कभी न कर सके। परस्पर
द्वेष ने उन्हें कभी एक होने ही न दिया। इसी का ही यह फल हु
कि भारत परतंत्रता की जंजीरों में जकड़ा गया। प्रमुख वीरगाथा
काल के काव्य दिल्ली, कन्नौज और मेवाड़ के राजाओं के चरित्रों
पर आश्रित हैं।

यह संघर्ष का युग था। वीरता दिखाना उस समय एक
बड़प्पन का चिह्न समझा जाता था। विजय प्राप्त करना सम्मान

का प्रधान आधार बन गया। यह लड़ने का फैशन दिनोदिन बढ़ता गया। जब कोई लड़ाई का बहाना बहुत कुछ करने पर भी न मिलता तो लड़ने वाला राजा की किसी लड़की का हरण करके वह मौका प्राप्त कर लेता। इस युग की वीरतापूर्ण छाप हमारे साहित्य पर पूर्ण रूप से पड़ी है।

इस युग के साहित्यनिर्माता चारण और भाट थे। वे अपनी लेखनी के चमत्कार के साथ २ तलवार के चमत्कार भी युद्ध मे दिखाते थे। इसीसे उनकी वीरवाणी में यथेष्ट बल था। अपनी ओजस्विनी कविताओं से वे लड़ने वालों में एक अलौकिक तेज भर देते थे। अपने आश्रय दाताओं का यशोगान कर उन्हें युद्ध के लिए सदा उत्तेजित करने का जोश उनकी कविताओं में भरा पड़ा है। उस युग के काव्यों को देखने से विदित होता है कि उस काल के काव्यकारों में काव्य निर्माण करने की अद्भुत शक्ति थी। परन्तु व्यक्ति विशेष की प्रशंसा के गीत गाने के कारण उनके काव्यों में संकीर्णता आ गई। इसी हेतु वे सर्वव्यापी न बन सके। राष्ट्रीयता के मङ्गलमय भावों का उनमें दर्शन नहीं मिलता।

उस समय का साहित्य वीरकाव्य था। वीररस के साथ शृंगाररस की भी उचित पुट है। इन ग्रंथों में उस समय के युद्धों का बड़ा ही सुन्दर एवम् सजीव वर्णन हुआ है। हिन्दी

सबल दुश्मन के चङ्गुल से स्वतंत्र होने की उनकी संपूर्ण चेष्टाएँ विफल हो गईं। जब उन्हें अपनी शक्ति का भरोसा न रहा तब उन्होंने अपनी रक्षा का भार ईश्वर पर छोड़ दिया। पराजित होने का उन्हें बड़ा क्षोभ था। हृदय में बड़ी आत्म-ग्लानि थी। उन्होंने ईश्वर भजन में अपने को लगा दिया। इधर मुसलमानों का अधिकार बढ़ चला था। वे भी अब युद्ध के जीवन से ऊब गए थे। और भारत में शान्ति संस्थापन के यत्न में व्यस्त थे। ठीक इसी समय भगवान की कृपा से कुछ ऐसे सन्त पैदा हुए जिन्होंने लोगों को मानवता का सच्चा रास्ता दिखाने का प्रयत्न किया। इसमें कोई संशय नहीं कि इन महात्माओं की मङ्गलमय वाणी ने देश का बड़ा हित किया।

कबीर और नानक जैसे सन्त एक ओर जाँति पाँति के बन्धन को तोड़कर एक नवीन समाज के निर्माण में लगे हुए थे तो दूसरी ओर कृष्ण और राम के दुलारे हमारी आर्य सभ्यता की आवाज़ बुलन्द कर रहे थे। भक्तिभावना के स्वर उन्होंने अपनी वाणी में भरे और देश के एक छोर से दूसरे छोर तक उनकी यह वाणी गूँज उठी। लोगों में नए सिरे से नव जीवन का संचार हुआ। आत्मविस्मृत हिन्दू जाति ने पुनः अपने वास्तविक रूप को पहिचाना।

सगुण भक्ति के आंदोलन ने चारों ओर सरस वातावरण पैदा कर दिया।

चारों ओर आनन्द का एक विचित्र समाँ बँधा हुआ था। एक ओर श्रीवल्लभाचार्य, चैतन्य महा प्रभु रामानुजाचार्य और तुकाराम आदि सन्तों के मङ्गलमय उपदेश जनता में नवजीवन फूँक रहे थे तो दूसरी ओर सूर, तुलसी और मीरा की काव्यधारा लोगों के हृदयभूमि को सरोबार कर रही थी। हिन्दी का यह भक्ति काल हमारे साहित्य का स्वर्णयुग है। सहित्याकाश के सूर्य और चंद्रमा को इसी युग ने जन्म दिया। इस युग में यद्यपि तीन प्रमुखधार बहती हुई दिखाई देती है। परन्तु उन तीनों में एक ही भावना का अन्तःस्रोत बहता हुआ नजर आता है। इस युग में अनेकों ऐसे देदीप्यमान महात्मा हुए हैं। जिनकी अलौकिक ज्ञानधारा ने न मालूम कितनी पथभ्रष्ट आत्माओं को सच्चा मार्ग दिखाया है। इस युग के प्रतिनिधि कवि ये हैं।

कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, मीरा, दादू, सुन्दरदास।

रीतिकाल

सम्राट् अकबर ने अपनी सहिष्णुतामयी नीति से हिन्दू और मुसलमानों को बहुत समीप ला दिया था

बड़ी योग्यता और परिश्रम से उसने अपनी शासन व्यवस्था को सम्हाले रखा किन्तु उसके पुत्र जहाँगीर ने बड़ी अकर्मण्यता दिखाई । वह दिन रात शराब में लगा रहता था । भारतीय नरेशों पर भी इसके इस विलासी जीवन का पूर्ण प्रभाव पड़ा । उन्होंने भी अपने दरबारों में नर्तकियों और मदिरा का उपयोग शुरू कर दिया । नशे में चूर राजा लोग नर्तकियों का संगीत सुनकर सूर और तुलसी की मधुरवाणी भूल गए । भोग के रोग ने उन्हें ग्रस लिया । कवियों ने भी अपने मालिकों का रुख पहिचाना । भला फिर क्या था ! शृंगार-रस की कविता बनाने का जोर बढ़ा ।

इस युग के कवियों में काव्य सौन्दर्य दिखाना प्रधान हो गया । भक्ति तो उनकी विलासतामयी भावनाओं के ऊपर आवरण डाल ने मात्र की वस्तु रह गई । नखशिख वर्णन और काव्यांगों का विवेचन होना आरम्भ हो गया । इस युग में कविता स्वान्तः सुखाय न बनकर राजदरबार की वस्तु बन गई । प्रत्येक कवि अपने प्रतिपक्षी कवि को पराजित करने में और किसी न किसी प्रकार अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित करने में लगा हुआ था । शृंगार-रस के उदाहरण में हिन्दी साहित्य में अपनी बराबरी नहीं । . ग्रन्थ खूब लिखे गए । शृंगार

रस का खूब प्रचार हुआ। भूषण ने वीर-रस की धा
बनाई। इस युग के प्रधान कवि ये हैं।

आचार्य केशवदास, बिहारी, मतिराम, भूषण, देव

आधुनिक काल

आधुनिक काल हिन्दी गद्य का काल कहा जाता
क्योंकि विशेषतः इस काल में गद्य सृजन ही हुआ। क
की धारा भी साथ साथ बहती रही है। भारतेन्दु युग
तो व्रजभाषा का पद्य में प्रयोग होता रहा। पर द्विवेदी यु
खड़ी बोली भी काव्य के लिए प्रयुक्त होने लगी और
यह समय आ चुका है कि खड़ी बोली का गद्य और
दोनों में एकाधिपत्य हो चला है। हर्ष की बात है
राष्ट्रभाषा के गौरवपूर्ण पद पर भी इसे प्रतिष्ठित किय
चुका है।

महाकवि चन्दवरदाई

चन्द वीरगाथाकाल के सर्व श्रेष्ठ कवि थे । हिन्दी के प्रथम महाकवि होने का गौरवशाली पद आपको ही प्राप्त है। आपने ही हिन्दी को एक स्थिर रूप देने का यत्न किया।

जीवनवृत्त

चन्दवरदाई दिल्ली सम्राट पृथ्वीराज के सखा, सामन्त और राजकवि थे । रासो के अनुसार वे भट्ट जाति के थे। इनकी मातृभूमि लाहौर थी। इनका और महाराज पृथ्वीराज का जन्म एक ही दिन हुआ, और दोनों ने एक साथ ही शरीर त्याग किया। इस प्रकार एक सच्चे मित्र का आदर्श दिखलाया । आप साहित्य, काव्य, छन्दशास्त्र ज्योतिष, पुराण और नाटक आदि अनेक विद्याओं में पारंगत थे। इन्हें जालन्धरी देवी का इष्ट था। जिनकी कृपा से ये अदृष्ट काव्य भी रचा सकते थे।

ग्रन्थपरिचय

इन्होंने पृथ्वीराज रासो नाम का एक विशाल ग्रंथ लिखा है । यह हिन्दी का एक प्रथम महाकाव्य है। यह २॥ हजार

पृष्ठों का विशद प्रबंधकाव्य है इसमें वीरभावों की बड़ी सुन्दर अभिव्यञ्जना हुई है। कल्पना और अद्भुत उक्तियों का चमत्कार भी इसमें देखने को मिलता है। इसमें ६६ समय व सर्ग हैं। इसका पिछला भाग चन्द के पुत्र जल्हन द्वारा पूर्ण हुआ ऐसा रासो में वर्णन मिलता है।

ग्रन्थमीमांसा

इस ग्रन्थ में पृथ्वीराज के अनेक युद्धों एवं विवाहों का विस्तृत वर्णन है। प्रधान घटना कन्नौज के राजा जयचन्द की पुत्री संयोगिता का पृथ्वीराज के द्वारा हरण किया जाना और शहाबुद्दीन गौरी के साथ पृथ्वीराज का युद्ध है। इस काव्य से चन्द की वर्णन कुशलता प्रकट होती है। युद्ध एवं प्रेमप्रसङ्गों का वर्णन कवि ने जमकर किया है। कथा में प्रवाह सर्वत्र एक सा नहीं है। उसका क्रम जगह २ टूटता है किन्तु कवि की आकर्षक वर्णनशैली एवं उसकी फड़कती हुई भाषा पाठक को उसमें तन्मय होने का बल देती रहती है। युद्ध वर्णन की अपेक्षा प्रेमप्रसङ्गों के वर्णन में कवि की वाणी अधिक सरस और संयत है। इनका प्रेमप्रसङ्ग लड़ाइयों से घिरा हुआ है। प्रेमी प्राणों पर खेल कर ही अपनी प्रेयसी को पा सका है। चन्द का यह काव्य हमें अति विकृत रूप में मिला है इसीसे कई विद्वानों ने इसे ऐतिहासिक दृष्टि से परखने के बाद जाली ग्रन्थ बताया

है। कितने ही विद्वानों ने इसे भाषा की कसौटी पर कसकर बहुत बाद का ग्रन्थ माना है। परन्तु हाल में कुछ ऐसे प्रमाण संग्रहीत किए गए हैं जिससे यह सिद्ध हो चुका है कि चन्द पृथ्वीराज का दरबारी कवि था।

पृथ्वीराज रासो चन्द ने ही लिखा था परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस ग्रन्थ में बहुत बाद तक प्रक्षेप होते रहे हैं परन्तु फिर भी जैसा जो हेरा फेरी किया हुआ यह काव्य हमारे पास है उसकी सरसता, चरित्रों की विविधता तथा कल्पना की उड़ान देखकर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता।

भाषा और शैली

रासो राजस्थानी भाषा में लिखा गया है यह डिंगल के नाम से प्रसिद्ध है। चन्द की भाषा में माधुर्य एवं प्रसाद की मात्रा कम एवं ओज की विशेष है। यह कवित्त छप्पय, दोहा सोरठ, त्रोटक, और आर्या आदि छन्दों में लिखा गया है। छन्द स्थान २ पर बदलते हैं परन्तु ग्रन्थ की सरसता में कोई कमी नहीं हो पाई है। चंद की बीर वाणी थमना नहीं जानती उसके छंद बदलते रहते हैं। उसकी भाषा बड़ी बलवती है और भाव प्रबल वेग से उफनते रहते हैं। अशुद्ध और विकृत पाठ रास्ता रोकने का प्रयत्न करते हैं परन्तु कथा प्रवाह पाठक को आगे बढ़ने का बल प्रदान करता है।

हमें यह कहते हुए गौरव का अनुभव होता है कि महाकवि चन्द हिन्दी साहित्य के जन्मदाता थे। उन्होंने उस समय रासो लिखा जिस समय हिन्दी का रूप निश्चित ही नहीं हुआ था। इन्होंने हिंदी को एक नवीन शरीर प्रदान किया। संस्कृत काव्य की शैली पर आपने हिन्दी का नवीन स्वरूप खड़ा कर दिया। सुंदर भाव, मौलिक कल्पना एवं रसों के योग से इसमें प्राण का सञ्चार किया। आज उसी की कल्पना का यह काव्य कन्हैया इस फले फूले रूप में हमारे आगे है। हिन्दी के आदियुग के इस चन्द पर हमें उचित अभिमान है।

महाकवि चन्द वरदाई की रचना का नमूना देखिए

(१)

मनहु कला ससभान, कला सोलह सो वन्निय।
बाल वैस, ससिता समीप, अमरित रस पिन्निय॥
विगसि कमला स्रिग भमर, वेनु, खंजन मृग, लुट्टिय।
हीर, कीर अरु बिंब, मोति नषसिष अहि घुट्टिय॥

(२)

वज्जिय घोर निसान रान चौहान चहौं दिस।
सकल सूर सामन्त समरि बल मंत्र जंत्र तिस॥
उट्ठि राज प्रिथिराज बाग मनो लग्ग बीर नट।
कढ़त तेग मनवेग लगत मनों बिज्जु झट्ट घट॥

थकि रहे सूर कौतिग गगन, रंगन मगन भइ सोनधर ।
हदि हरपि वीर जग्गे हुलसि हुरेड रंग नव रत्त वर ॥

महात्मा कबीर

कबीर भारत के एक प्रसिद्ध सन्त थे। भारत में सर्व प्र
बन्धुत्व की भावना फैलाने वाले आप ही थे। ये ज्ञानाश्र
शाखा के प्रतिनिधि कवि थे। इनका व्यक्तित्व बड़ा प्रभ
शाली था। आपकी सबसे बड़ी यह विशेषता थी कि आप
निर्भीक वक्ता थे। जो समाज में बुराई देखते थे उसे निःसंक
कह देते थे। उन्हें हिन्दू मुसलिम किसी का भी विचार न थ
जिसमें पाखण्ड देखा उसकी खुले शब्दों से निन्दा की।

जीवन वृत्त

कबीर का जन्म सं० १४५५ में हुआ था। इनके जन्म
सम्बन्ध में अनेक प्रकार के प्रवाद प्रचलित हैं। कहते हैं कि
एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। लोक लाज
माता ने इनको छोड़ दिया। तदन्तर धीरूनाम के जुला
इनका पालन पोषण किया। पीछे से यही कबीर के नाम से विख
हुआ। घर पर जुलाहा गिरी का काम करते थे परन्तु इ
इनकी अधिक रुचि न थी। बचपन से ही ये भावुक और

थे। हिन्दू और मुसलिम दोनों सम्प्रदायों के सत्संग में वे आया करते थे। ये रूढ़ीवाद के कट्टर विरोधी थे। बहुश्रुत होने के कारण इनका ज्ञान बहुत बढ़ा चढ़ा था। ये अनपढ़ थे।

ग्रन्थ परिचय

कबीर पढ़े लिखे नहीं थे। ये प्रकृति सिद्ध कवि थे। इनका उपदेश प्रायः पद्य में ही होता था। इनके शिष्य गण इनकी कविताओं को लिखते रहते थे। कबीर की यह वाणी बीजक नामक ग्रन्थ में संग्रहित है। इसके तीन भाग किए गए हैं। रहमैनी, सबध और साखी इसमें वेदान्त तत्व हिन्दू मुसलमानों को फटकार आदि अनेकों प्रसंग हैं।

आलोचना

कबीरदासजी ऐसे महात्मा थे जो नवीन युग ला सकते थे। युग प्रवर्तक महात्मा में जो विशेषताएँ होनी चाहिए वे सभी उनमें प्रचुर मात्रा में थी। जिस बात को इन्होंने सत्य अनुभव कर लिया उसके कहने में वे किसी से न दबे। इसी से उनके काव्य में जबर्दस्त ताकत है। उनके शरीर का रोम रोम भगवान् की भक्ति में भरा था। कबीर ने जो कुछ कहा सभी अनुभव के बाद कहा पुस्तक द्वारा पढ़ी हुई शिक्षा पर उन्हें विश्वास न था। ईश्वर सम्बन्धी जो रचना इन्होंने की है। वहाँ रहस्यवाद की

सुरम्य झलक दृष्टि गोचर होती है। कबीर ने अपने सम्पूर्ण
में परमात्मा का मार्मिक परिचय दिया है।

काव्य रसियों की सम्मति में कबीर का रहस्यवाद रूखा
उनका माधुर्य भाव भी उन्हें सुन्दर दिखाई नहीं देता। कि
यह बात नहीं। कबीरदास जी ने लौकिक जीवन का बहुत सु
चित्र खींचा है। उनकी कविता में चाहे बाह्य सौन्दर्य न
परन्तु हृदय को स्पर्श करने वाले भावों की कमी नहीं है।
विषय का कबीर ने प्रतिपादन किया है वह विषय गम्भीर
है। वे काव्य शास्त्र के ज्ञाता नहीं थे। भाषा पर इनका अधि
न होने के कारण विचार धारा स्पष्ट रूप से व्यक्त न होने पाई
वेदान्त और दर्शन के विचारों को व्यक्त करने वाले शब्दों की
कमी थी। सचमुच कबीर एक प्रकृति सिद्ध कवि थे। जीवन की
नश्वरता का एक चित्र देखिए :—

माली आवत देख कर, कलियां करी पुकार।
फूले फूले चुन लिए, काल्ह हमारी बार॥

कबीर अपनी आत्मा को परमात्मा में लगा देता है। आत्म
शुद्धि होने के बाद वह बहुत ऊँचा उठ जाता है। सम्पूर्ण संसा
में अपने प्रियतम के दर्शन होने लग जाते हैं। इसी से वे ए
जगह कह उठे हैं।

लाली मेरे लाल की, जित देखो तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी होगई लाल।

सभी सन्त काव्यों में थोड़ा बहुत रहस्यवाद मिलता है। रन्तु उनका काव्य विशेष कर कबीर का श्रेष्ठ है।

कबीर का काव्यत्व

कबीर ने कविता के लिए कविता न की। कबीर की कविता में छन्द और अलंकार देखना बड़ी भूल होगी। उनकी दृष्टि में यह सब गौण थे। उनकी विचार धारा सत्य के प्रकाशन में रही है। उनकी कविता में उनकी प्रतिभा और हृदय का मेल है। इसीसे दूसरों पर प्रभाव डालने की शक्ति इसमें आगई है।

अर्थ की जटिलता इनमें भरी पड़ी है। परन्तु यह केवल दार्शनिक विवेचन में ही है। वैसे कबीर का काव्य साधारण कोटि का नहीं कबीर की भाषा में भारत में प्रचलित सभी भाषाओं का मेल है। पढ़े लिखे वे थे नहीं। उनकी भाषा में अक्खड़पन है। साहित्यिक कोमलता का सर्वथा अभाव है। कहीं २ इनकी भाषा गवारूपन लिए हुए है। परन्तु उनके काव्य में खरेपन का इतना मिठास है कि उसके सामने सभी अवगुण लुप्त हो जाते हैं। कबीर का काव्य मुक्तक और गीत काव्य के अन्तर्गत माना जाता है। ज्ञान और नीति इनका विषय रहा है। नीति

काव्य को जिस सफलता से कबीर ने कहा है, वैसा अन्य कवि नहीं कह सके। हमारा विश्वास है कि कबीर का काव्य हृदय की पीर को हलका करने में बड़ा सहायक है।

महात्मा कबीर की रचना का उदाहरण देखिए

(१)

मन न रंगायो तू रंगायो जोगी कपरा।
आसन मारि मन्दिर में बैठे,
नाम छाड़ि पूजन लागे पथरा।
कनवा फोड़ाय जोगी जटवा धढ़ौलैं,
दाढ़ी बढ़ाय जोगी होय गैलैं बकरा॥

फिर देखिये

कांकर पाथर चुनि के मस्जीद लई चुनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे क्या बहिरा हुआ खुदाय॥
पूजा सेवा नेम व्रत सब गुडियन का सा खेल।
जब लगी दिल परिचय नहिं तब लगी संशय मेल॥

महाकवि जायसी

महाकवि जायसी प्रेम मार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि थे। आप प्रसिद्ध सूफी फकीर शेख मोहदी के शिष्य थे। सूफी धर्म में पूरी श्रद्धा होते हुए भी इन्होंने हिन्दू देवि देवताओं का आदर के साथ वर्णन किया है। आपकी कविता में सर्वत्र प्रेम की पीर दिखाई देती है।

जीवन वृत्त

इनका जन्म गाजीपुर में हुआ था। ये अपने समय के सिद्ध फकीरों में माने जाते थे। आप बड़े लोक प्रिय थे। चेचक के प्रकोप के कारण इनकी एक आंख चली गई थी। और ये देखने में बड़े कुरूप हो गए। कहते हैं कि बादशाह शेरशाह इनके रूप को देखकर हंसे थे। इस पर उन्होंने ऐसा लाजवाब उत्तर दिया कि उसे सुनकर बादशाह सहम गया। जायसी बड़े विद्वान थे।

ग्रन्थ परिचय

जायसी ने निम्नलिखित तीन पुस्तकें लिखी हैं। पद्मावत, अखरावट तथा आखिरी कलाम

जायसी का यह ग्रन्थ प्रबन्ध काव्य की दृष्टि से बड़ा उत्तम माना जाता है। रामचरित मानस के बाद प्रबन्ध काव्य में दूसरा इसी का नाम है।

भाषा और शैली

जायसी ने ठेठ अवधी भाषा का प्रयोग किया है। उस समय यह सर्वसाधारण के बोल चाल की भाषा थी। साहित्य सृजन में इसका प्रयोग नहीं होता था। सर्व प्रथम प्रेम मार्गी कवियों ने ही इस भाषा में काव्य निर्माण करना प्रारम्भ किया। महाकवि जायसी ने इस भाषा की उत्कृष्टता सब पर विदित कर दी।

जायसी की वर्णन शैली सरल और सजीव है। इनकी अलंकार योजना बड़ी सुन्दर है। स्वभाविक गति से आए हुए अलंकार भावों में इस प्रकार घुलमिल गए हैं जैसे:—दूध में पानी। इस प्रकार हम देखते हैं कि जायसी में वे सब गुण प्रचुर-मात्रा में हैं, जो एक महाकवि में होने चाहिए। दोहा और चौपाई छन्द में यह काव्य लिखा गया है।

प्रेम का सच्चा स्वरूप देखने की इच्छा रखने वाले महानुभावों को चाहिए कि वे पद्मावत को ध्यान से देखें। लेखक को विश्वास है कि उसका विरह वर्णन आपकी आंखों में

भक्त शिरोमणि सूरदास

हिन्दू समाज में भक्तशिरोमणि सूरदासजी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। आपके हृदय में कृष्णभक्ति की पवित्र धारा बहती थी। उसी के प्रभाव से इनकी वाणी से अमृत वर्षा हुई। जिस समय हिन्दू जाति धार्मिक अत्याचारों से पीड़ित होकर छिन्न भिन्न हो रही थी उस समय सूरदास ने उन्हें अपने धर्म पर डटे रहने का बल दिया।

जीवन वृत्त

महात्मा सूरदासजी का जन्म सम्वत् १५४० मे मथुरा और आगरा के बीच रुणक्ता नामक गाँव मे हुआ था। ये सारस्वत जाति के ब्राह्मण थे। ये जन्मांध थे या बाद में अंधे हुए इसमें विद्वानो के विभिन्न २ मत हैं। ये व्रजभाषा के सर्वोत्कृष्ट कवि थे। ये वृन्दावन में निवास करते थे। आप महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य थे। उन्हीं की कृपा से आपको कृष्णभक्ति का अक्षय खजाना मिला। श्रीमद्भागवत के आधार पर इन्होंने व्रजभाषा में गीति काव्य बनाया। उनकी इस रचना का नाम "सूरसागर" है।

[संतोष]

रहस्य तक ही रह गई। आचार्य शुक्ल के शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि इसमें सन्देह नहीं कि आप शृंगार और वात्सल्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। भिन्न २ लीलाओं के प्रसङ्गों को लेकर इस सच्चे रसमग्न कवि ने मधुर और मनोहर पदों की झड़ी सी बांध दी है। यह रचना इतनी उत्कृष्ट और काव्याङ्गपूर्ण है कि आगे होने वाले कवियों की शृङ्गार और वात्सल्य रसकी उक्तियों सूरकी जूठन सी जान पड़ती है।

सूर की मधुरवाणी ने जिस क्षेत्र में संचार किया उसका कोई कोना अछूता न छोड़ा।

श्रीकृष्णचन्द्र की बाललीला का वर्णन अतीव मर्मस्पर्शी है। *स्वाभाविकता उनकी कविता का प्राण है। गोपियों का* विरह वर्णन तो चरम सीमा तक पहुँच गया है। इस पर भी सूर की सबसे बड़ी खूबी यह है कि हम जब उनकी रचना को पढ़ते हैं तो आनन्द से क्रीड़ा करते हुए बालकों की टोली हमारी आँखों के सामने आजाती है। देखिए—

मैया कबहुँ बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहि दूध पियत भई यह अजहूँ है छोटी॥

बाललीला के स्वाभाविक मनोहर चित्रों का विशाल भण्डार जैसा सूरसागर में है वैसा और किसी में नहीं।

मारंत प्रीति करि जो मात सों, मनमोहन जान सको।
हम जो प्रीति करि माखन सों, कबहू न कछू कहो॥
सूरदास प्रभु दिन दस दूजो, नैननि ओट रहो

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो॥
मोसों कहत मोल को लीनों, तू जसुमति कब जायो।
कहा करौं इस रिस के मारे, खेलन हौं नहीं जातु॥
पुनि पुनि कहत, कौन है माता, को है तुमरो तातु।
गोरे नन्द, जसोदा गोरी, तुम कत स्याम सरीर॥
चुटकी दै दै हँसत ग्वाल सब, सिखै देत बलबीर।
तू मोहि को मारन सीखी, दाउहि कबहुँ न खीझै॥
मोहन को मुख रिस समेत लखि, जसुमति सुन सुन रीझै।
सुनहु कान्ह, बलभद्र चबाई, जनमत ही को धूत॥
सूरश्याम मो गोधन की सौं, हौं माता तू पूत॥

भाषा और शैली

सूरदासजी की भाषा शुद्ध और परिमार्जित है। उनकी भाषा भावों के अनुकूल चलती है। अपढ़ व्यक्ति भी इनके गीतों को सहज में ही अर्थ समझ लेता है। सूरसागर के हिन्दी में संक्षिप्त ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं किन्तु खेद है कि अभी तक सूर सागर का प्रामाणिक ग्रन्थ प्रकाशित नहीं हुआ।

सचमुच इस नेत्रविहीन कवि पर हमें समुचित गर्व है। इनका एक एक पद हिन्दी साहित्य का अनमोल रत्न है। जब तक सूरदास का एक पद भी शेष रहेगा। तब तक हिन्दी भण्डार का मूल्य आँकने का कोई भी आलोचक साहस न कर सकेगा।

किसी ने कहा है :—

> सूर सूर तुलसी ससी, उडुगन केशवदास।
> अन्य कवि खद्योत सम, जहं तहं करत प्रकाश॥

सूरदास की कविता की छटा देखिये।

प्रीति करि काहू सुख न लह्यो।
प्रीति करि पतंग दीपक सों, आपै प्राण दह्यो
अलिसुत प्रीति करी जलसुत सों, संपति हाथ गह्यो

सारंग प्रीति करि जो नाद सों, सनमुख बान सह्यो ।
हम जो प्रीति करि माधव सों, चलत न कछू कह्यो ॥
सूरदास प्रभु बिन दुख दूनो, नैननि नीर बह्यो ।

मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो ॥
मोसों कहत मोल को लीनों, तू जसुमति कब जायो ।
कहा कहौं यह रिस के मारे, खेलन हौं नहीं जातु ॥
पुनि पुनि कहत, कौन है माता, को है तुमरो तातु ।
गोरे नन्द, जसोदा गोरी, तुम कत स्याम सरीर ॥
चुटकी दै दै हंसत ग्वाल सब, सिखै देत बलबीर ।
तू मोहि को मारन सीखी, दाउहि कबहुँ न खीझै ॥
मोहन को मुख रिस समेत लखि, जसुमति सुन सुन रीझै ।
सुनहु कान्ह, बलभद्र चवाई, जनमत ही को धूत ॥
सूरस्याम मो गोधन की सौं, हौं माता तू पूत ॥

दर दर का भिखारी हो गया। सौभाग्य से एक बार बाबा नरहरिदास ने इनको देखा। सन्त की आँखों ने तुलसी के भविष्य का अध्ययन कर लिया और वे उसी क्षण उसे अपने आश्रम में ले गये। शिक्षा प्रारम्भ हुई। तुलसीदास बड़े प्रतिभाशाली कवि थे। शीघ्र ही शास्त्रों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर लिया। एक दिन विदाई देते हुए गुरूजी ने कहा—वत्स! जाओ! यह विस्तृत संसार तुम्हारा क्रीडास्थल है। पुण्य कर्म में लगो और रामभक्ति के प्रचार में अपने जीवन को लगादो। आशीर्वाद पाकर तुलसीदासजी घर आए। रत्नावली नामक एक स्त्री से इनका विवाह हुआ। दोनो का सुखमय जीवन व्यतीत हो रहा था। एक दिन रत्नावली बिना कहे अपने भाई के साथ पीहर चली गई। भादव की चढ़ी हुई नदी को पार करते हुए घर पहुंचे। स्त्री उनके इस व्यवहार से बड़ी दुःखित हुई और उसने फटकारते हुए कहा।

> लाज न आवत आपको, दौरे आवहुं साथ।
> धिक् धिक् ऐसे प्रेम को, कहां कहहुँ हो नाथ॥
> अस्थि चरम मय देह, ममता में एती प्रीती।
> होती जो श्री राम में, होती न तव भय भीति॥

नारी का निशाना ठीक बैठा। बाणी का बाण कवि के हृदय में लग गया। और वे उसी दम राम की खोज में निकल पड़े। १६ वर्ष तक देशाटन और तीर्थ यात्रा की।

ाम ने हमारे हृदय को मनोविकार कर रक्खा है। इन्होंने सम्पूर्ण
जीवन पर प्रकाश डाला है।

गुरु और दर्शन की सीमित ऊँचाई वाले टीलों से ये
ातुल अलग हिमालय की सबसे ऊँची चोटी पर खड़े हैं
सहृदयों से उन्हें दिव्य ज्योति भी प्राप्त है। अतः वृद्ध धारी
व प्रशान्तललाट कवि से विश्व अनुभूति अद्भुत का चन्द्री
रण हुआ है।

इनकी विनय पत्रिका भी बड़ा सुन्दर काव्य है। गोस्वामीजी
की निर्मल आत्मा इसी शुभ्र दर्पण में दिखाई देती है। यह ग्रन्थ
क पत्रिका के रूप में है। भक्ति का एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है।
ान्तरस का पूर्ण परिपाक इसमें हुआ है। यह ग्रन्थ गीतपद्धति
राग रागनियों सहित लिखा गया है। कवितावली में कवित्त
और सवैयापद्धति में राम का गुण गान किया है। गीतावली
गीत पद्धति में तथा रामायण दोहा चौपाई में है तथा दोहा
ली दोहों में, इस प्रकार इन्होंने चारों पद्धतियों में अपने काव्य
का निर्माण किया।

भाषा और शैली

तुलसीदासजी कई भाषाओं के विद्वान् थे। संस्कृत के भी
बड़े विद्वान थे। यह उनके मंगलाचरण के श्लोकों से विदित
होता है। प्रायः सभी रसों में इन्होंने काव्य रचना की है।

(३)

[illegible]जनीचर बीर विसाल, कराल विलोकत काल न खाए।
[illegible]नरीर कपीस किसोर बड़े, बरजोर, परे फंग पाए॥
[illegible]लपेटि अकास निहारी कै हाँकि हठी हनुमान चलाए।
[illegible]के गात चले नभ जात, परे भ्रम घात न भूतल आए॥

(४)

[illegible]टी वर पर्नकुटी तर बैठे हैं राम सुभाय सुहाए।
[illegible] प्रिया, प्रिय बन्धु लसैं, 'तुलसी' सब अंग घने छबि छाए॥
[illegible] मृगा, मृग नैनी कहे, प्रिय बैन ते प्रीतम के मन भाए
[illegible] कुरंग के संग सरासन, सायक लै रघुनायक धाए॥

(५)

[illegible] अंग अंग दलित ललित फूले किंसुक से,
हने भट लाखन लखन जातुधान के।
मारि कै पछारि कै उपारि भुजदंड चंड,
खंड खंड डारे ते विदारे हनुमान के।
[illegible]दत कबंध के कदंब बंब सी करत।
धावत दिखावत हैं लाघौं राघौं बानके।
'तुलसी' महेश, विधि लोकपाल, देवगन।
देखत विमान चढ़े कौतुक मसान के।

इनका सारा समय भजन में ही बीतने लगा। इनका सांसारिक विवाह मेवाड़ के राणा भोजराज के साथ हुआ था। ससुराल में भी इनकी पूजा का क्रम जारी रहा। इनकी भक्ति का भोजराज पर गहरा प्रभाव पड़ा किन्तु दुर्भाग्यवश वे रणांगण में मारे गए। अब इनका सारा समय भजन में लगने लगा। धीरे २ इनकी कीर्ति चारों ओर फैलने लगी। राजपरिवार को मीरा का यह कार्य अच्छा न लगा। उन्होंने मीरा को समझाने की बड़ी चेष्टा की परन्तु कोई फल न निकला। राणा के अत्याचार से तङ्ग आकर मीरा चित्तौड़ छोड़ कर मेड़ते चली गई। यहाँ से विभिन्न तीर्थों का भ्रमण करती हुई वह द्वारिका पहुँची। उसका शेष जीवन वहीं बीता।

ग्रन्थ परिचय

मीरा ने ४ ग्रन्थ लिखे हैं :—

१—नरसी का मायरा २—गीतगोविन्द टीका
३—राम गोविन्द ४—राग सोरठ

काव्य मीमांसा

मीरा की कविता गहरी भावुकता लिए हुए है। वियोग शृंगार में उसकी रचनाएँ बनी हैं। विरह का ऐसा सजीव वर्णन करने में बहुत कम कवि सफल हुए हैं। इसका कारण यह है कि दुःख के मार्ग से उसे अपने प्रियतम के दर्शन हुए थे।

जीवन मे घुल मिल गए थे। उसके गीतों का प्रचार प्राय सारे भारत मे है। हृदय के दर्द के कारण ही उसकी वाणी मे इतना बल आ सका है।

भाषा और शैली

मीरा की भाषा मे ब्रजभाषा, गुजराती और राजस्थानी का सम्मिश्रण है। पञ्जाबी और खड़ीबोली का पुट भी दृष्टिगोचर होता है। इनकी भाषा सदा सीधी सादी और सरल हुई है। सुन्दर भावों के कारण वह माधुर्यगुण युक्त है।

वीर भूमि मरुधरा मे उसने कृष्णभक्ति की कलम लगाई। जिसके सुगन्धित फूलों से सारा भारत सुरभित हो उठा। चन्द और गंग की वाणी पर मर मिटने वाले राजस्थान को उसने प्रेम का मधुर संगीत सुनाया। प्रेम की पावन वेदी पर मीरा का आत्मबलिदान अमर है। उसकी साधना मनन करने योग्य है।

प्रेमदिवानी मीरा के पद देखिए

(१)

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई ॥ टेक
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
छाँड़ि दई कुलकी कानि, कहा करि है कोई॥
सन्तन ढिग बैठि बैठि, लोक लाज खोई।

[वृन्दावन]

आचार्य केशव

महाकवि केशव रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं। हिन्दी के प्रथम आचार्य होने का गौरव आपको ही प्राप्त है इनके युग में विशेष रूप से शृंगार रस पर खूब रचना हुई। संयोग और वियोग दोनों पक्षों पर पर्याप्त लिखा गया। हिन्दी में काव्य तक कविता तो खूब बन गई थी। परन्तु अभी तक उस पर विवेचन नहीं हुआ। सर्व प्रथम केशव ने ही इस पर लेखनी चलाकर शास्त्र का रूप दिखाया। ये कवि और आचार्य दोनों ही थे। आलोचकों ने गम्भीर अध्ययन के बाद यह प्रमाणित किया है कि सूर और तुलसी के बाद तीसरी श्रेणी का कवि केशव ही है।

जीवन वृत्त

आचार्य केशव सनाढ्य कुल में उत्पन्न हुए। प० काशीनाथ के पुत्र थे। इनका जन्म सं० १६१२ में हुआ ओरछा नरेश के भाई इन्द्रजीत की सभा में ये रहते थे। आप संस्कृत के धुरन्धर विद्वान् थे। और आर्थिक चिन्ता से सर्वथा मुक्त थे। संस्कृत का

लंकार प्रदर्शन किया है। उच्च भावना कविता में मिलती ही
नहीं इन्होंने तो केवल शब्दों के साथ खिलवाड़ किया है। केशव
हृदय के सूक्ष्मतम भावों की तह तक पहुंचाने की शक्ति है ही
नहीं। सारा ग्रन्थ संवादों से परिपूर्ण है। कथानक के मार्मिक
एवं मौलिक स्थलों को इन्होंने पहिचाना ही नहीं। इस प्रकार
इन्होंने अनेकों दोषों का प्रदर्शन करते हुए कवि केशव को नीचा
दिखाने का विफल प्रयास किया। परन्तु वस्तुत केशव की
कविता हिन्दी साहित्य का गौरव बढ़ाने वाली है इसमें कोई
सन्देह नहीं। छन्दों के प्रयोग में केशव ने स्वच्छन्दता से काम
लिया है। परन्तु बदलते हुए छन्द तो रोचकता पैदा करते हैं।
पाठक उनके काव्यों से ऊबता नहीं। रामचन्द्रिका में फड़कते
हुए वर्णनों की भरमार है। सवादों से प्रबन्ध प्रवाह में नव जीवन
आ गया है। केशव के विरोधी आलोचक भी इसे मुक्त कंठ से
स्वीकार करते हैं। वस्तुतः केशव जैसे स्वभाविक और सरस
संवाद हिन्दी साहित्य में तो क्या विश्व साहित्य में नहीं मिल
सकते। इसपर कवि ने एक नवीन दृष्टान्त उपस्थित किया
है। देखिए :—

करि जोरि कह्यौ हौं पौन पूत जिय जननि जानि रघुनाथ दूत।
रघुनाथ कौन, दशरथ नन्दन, दशरथ कौन अज तनय चन्द॥
केहि कारण पठए एहि निकेत, निज देन लेन सन्देश हेत।
गुण रूप शील शोभा स्वभाव, कुछ रघुपति के लक्षण बताय॥

केशव ने अपनी कविता से सम्राट को ऐसा खुश किया कि उसने बीरसिंह का जुर्माना माफ कर दिया।

केशव अपने युग का एक सर्वश्रेष्ठ कवि था। वस्तुतः सम्पूर्ण भारत के कवि इनकी कविताओं से कायल थे। कहते हैं केशव बड़े रसिक थे। एक दिन वृद्ध होने पर वे किसी कुएं पर बैठे हुए थे। वहां स्त्रियों ने बाबा कह कर संबोधित किया? उस समय आपने यह दोहा बनाया।

केसव केसनि अस करि, बैरिहु जस न कराहि।
चन्द्रवदनि मृगलोचनी, "बाबा" कहि कहि जाहि॥

आपकी कविता की छटा देखिए

राघव की चतुरङ्ग चमू चय, को गनै केसव राज समाजन।
सूर तुरंगन के उरझे पग, तुंग पताकिन की पट साजन॥
टूट परे तिनते मुकता, धरनी उपमा बरनी कविराजन।
बिंदु किधौं मुख फेनन के, किधौं राजसिरी स्रवै मंगललाजन॥

[सत्तावन]

महाकवि बिहारी

महाकवि बिहारी हिन्दी साहित्य का एक चमकता हुआ सितारा है। इनका एक २ पद हिन्दी साहित्य का एक अनमोल रत्न है।

जीवन वृत्त

बिहारी का जन्म ग्वालियर के पास एक गाँव में हुआ। इनका शेष जीवन बुन्देलखण्ड में बीता। ये जयपुर नरेश जयसिंह के दरबारी थे। यहाँ इनका बड़ा सम्मान था। जिस समय ये जयसिंह के दरबार में पहुँचे उस समय राजा जयसिंह अपनी नई रानी में इतने आसक्त थे कि वे राजकार्य तक न करते थे। आवश्यक काम यों ही पड़े रहते थे। राज व्यवस्था बिगड़ती चली जारही थी। ऐसे समय में आप वहां पहुँचे इन्होंने एक ऐसा हृदयस्पर्शी दोहा लिखा कि राजाजी सचेत हो गए। उसी दिन बिहारी राज कवि बना। वह हृदयपरिवर्तनकारी दोहा यह है।

नहि पराग नहि मधुप मधु, नहि विकास यहि काल।
अली कली ही तें फंस्यो, आगे कवन हवाल॥

इस प्रकार के उपदेश को कान्ता का सा मधुर उपदेश कहते हैं। आश्रित होते हुए भी यह बड़ी आज़ाद प्रकृति के थे।

ग्रन्थ परिचय

इन्होंने केवल सात सौ दोहे लिखे हैं। जयसिंह से इनको एक २ दोहे पर एक २ अशर्फी मिली थी। इन सब दोहों का समूह बिहारी सतसई के नाम से विख्यात है।

ग्रन्थ मीमांसा

इनका काव्य मुक्तक काव्य है। इनकी रचना में प्रबन्ध नहीं है। यदि प्रबन्ध काव्य को विस्तृत बगीचा मानें तो इसे चुना हुआ गुलदस्ता समझना चाहिए। बिहारी सतसई की अनेकों टीकाएं हो चुकी हैं। इनमें ४-५ तो बहुत ही प्रसिद्ध हैं। जिनमें कृष्णकवि की टीका, हरिप्रकाश टीका, लल्लूलाल जी की टीका आदि हैं और कई कवियों ने कुण्डलिया छन्द में टीका की है। कई कवियों ने सवैया छन्द में इसकी टीका की है। संस्कृत में भी इसकी टीका हो चुकी है। प्रायः सभी भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है। इन टीकाओं से "बिहारी सतसई" की लोकप्रियता स्पष्ट होती है। बिहारी के विषय में इतनी आलोचना एवम् प्रत्यालोचना हो चुकी है कि उसका एक अलग साहित्य ही बन चुका है।

[क्रमशः]

व भी इन दोषों से मुक्त नहीं है। आपकी भाषा बड़ी सुन्दर । महाकवि बिहारी ज्यौतिष एवं राजनीति के भी पूर्ण ज्ञाता । संयोग एवम् वियोग पर आपने मार्मिक रचना की है। ावुक सुकुमारता के दर्शन में बिहारी अपना कोई प्रतिद्वन्दी हीं रखते। मानवीय रचना का सूक्ष्म प्रकृति वर्णन इन्होंने ठया है। काव्याङ्गों के बड़े सुन्दर वर्णन आपने किए है। ृंगारिक होने पर भी आपके भक्तिविषयक दोहे बड़े अनूठे है। धुर रस के लिए उन्होंने माधुर्यमयी व्रजभाषा का प्रयोग कर णि कांचन संयोग उपस्थित कर दिया। हृदय के सुन्दर भावों ो आपने शब्दों द्वारा बड़ी खूबी से उतारा है।

> सघन कुंज छाया सुखद, शीतल सुरभि समोर।
> मन ले जात है जो वहै, वा जमुना के तीर॥

सचमुच बिहारी के दोहे दिल और दिमाग दोनों को तर ने वाले हैं। काव्यरस के प्यासों को उनके दोहों का गहराई अध्ययन करना चाहिये।

कविराज भूषण

महाकवि भूषण वीररस के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनकी ओज पूर्ण वाणी में अपरिमित जोश भरा पड़ा है। उनकी कविता पढ़कर कायर से कायर व्यक्ति का हृदय भी उत्साह से भर कर उठता है। अत्याचारों से दलित हिन्दू जाति को उन्होंने अपनी वीरवाणी से बचाया। ये हिन्दू जाति के प्रतिनिधि कवि हैं। शिवाजी एवं छत्रसाल उनकी प्रशंसा के पात्र थे जो प्रधान-रूप से हिन्दुत्व के पुजारी थे।

भूषण का आविर्भाव हिन्दी के उस युग में हुआ जब कि कवि लोग शृंगार के निर्माण में लगे हुए थे। नायक नायिकाओं के हासविलास के चित्रण किए जा रहे थे। देश की सभ्यता एवं संस्कृति खतरे पर थी। भूषण से यह देखकर न रहा गया। उनका हृदय देश की पुकार से थर्रा उठा। उनके हृदय से वीररस की धारा बह चली। इन्होंने हिन्दूगौरव बढ़ाया।

जीवन वृत्त

ये कानपुर जिले के तिकवांपुर नामक गाँव के निवासी थे। कहते हैं कि ये वीरकवि चिन्तामणि और मतिराम के भाई थे। चित्रकूट के सोलङ्की राजा रुद्र ने आपको कविभूषण की उपाधि से विभूषित किया। और इसी नाम से ये विख्यात हो गए। राजा छत्रसाल के दरबार मे इनका बड़ा मान था।

ग्रन्थ परिचय

आपकी ३ पुस्तकें प्रसिद्ध हैं—

१ शिवराजभूषण २ शिवाबावनी ३ छत्रसाल बावनी

ग्रन्थमीमांसा

शिवराज भूषण अलङ्कार ग्रन्थ है। इसमे शिवाजी महाराज की प्रशंसा में कवित्त बनाए गए हैं। इसमें रीतिकाल का प्रभाव पाया जाता है। इन्होंने शिवाजी का जो कि उस समय हिन्दूधर्म के संरक्षक के रूप में थे, वर्णन किया है। महाराज छत्रसाल भी लोकप्रिय वीर थे। इसी कारण महाकवि भूषण का वीररस का काव्य इतना लोकप्रिय हो सका।

महाराज छत्रसाल और शिवाजी की उत्कट वीरता का इन्होंने वर्णन किया। इनकी वीरप्रसविनी ओजीली कविताओं को पढ़कर वीरों के हृदय झूमने लगते थे। आत्मगौरव विस्मृत

ं वीरता के जो चित्र खींचे हैं वे वस्तुतः बड़े ही लोमहर्षक
र उत्तेजना उत्पन्न करने वाले हैं। सचमुच भूषण जी की
वाणी सारी जनता के हृदय की संपत्ति है।

महाकवि भूषण की मालोपमा का नमूना देखें—

इन्द्र जिमि जम्भ पर बाड़व सुअम्भ पर
रावण सदम्भ पर रघुकुल राज हैं।
पौन वारिवाह पर शंभु रतिनाह पर,
ज्यों सहस्रबाहु पर रामद्विजराज हैं।
दावा द्रुमदंड पर, चीता मृगझुण्ड पर,
भूषण वितुण्ड पर जैसे मृगराज हैं।
तेज तमअंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलेच्छवंस पर सेर सिवराज हैं।

ष्टि से देखते थे। किन्तु भाषा के सम्बन्ध में राजाजी से मन
द हो गया था। जो अन्त तक बढ़ताही गया। आपने हिन्दी
लिए बीच का मार्ग निश्चित किया। काव्य रसिक होने के
ाथ साथ आप उच्चकोटि के साहित्यसेवी भी थे। जिसमें
आपने अपना सारा धन लुटा दिया। सम्पादन का कार्य भी आपने
केया था। कवि वचन सुधा और हरिश्चन्द्र मेगजिन पत्रिका आपने
चलाई थी। जिसमें अनेक विद्वानों की कविताएँ तथा लेख लिखे
जाते थे। आपने हिन्दी साहित्य को बड़ा भारी साहित्य भण्डार
दिया है। आपने प्रत्येक क्षेत्र में कविता की। तथा समाज की
कुरीतियों का भी जोरदार खण्डन किया। राष्ट्रीय भावनाओं का
श्री गणेश आप ही ने किया। भारत वासियों को उनकी गुलामी
का बोध कराया। गद्य और पद्य दोनों ही में इन्होंने सुन्दर
रचना की है। समस्यापूर्ति करने में तो वे पूर्ण सिद्ध कवि थे।
आपने कुल मिलाकर १७५ पुस्तकों का निर्माण किया।

आलोचना

भारतेन्दु जी नाट्य साहित्य के जन्म दाता कहे जाते हैं। यद्यपि आप से पहले भी हिन्दी के चार पांच नाटक लिखे गए थे। परन्तु उनमें नाटकत्व की अपेक्षा काव्यत्व की भावना अधिक थी। आपने १६ नाटक लिखे हैं जिनमें से कितने ही संस्कृत नाटकों के अनुवाद और कितने ही मौलिक है।

देश प्रेमी एवं राष्ट्रीयता को तो हिन्दी में प्रवेश कराने वाले आपही हैं। हिन्दी साहित्य के गद्य की वर्तमान शैली के आदि उत्पादक हैं। अंग्रेजी साहित्य के गद्य निर्माण में जो महारानी विक्टोरिया का जो महत्व था वही हिन्दी गद्य निर्माण में बाबू हरिश्चन्द्र का है। इनके गद्य में रसीलापन भाषा का प्रवाह एवं ओज पूर्ण रूप से प्राप्त होते हैं। पद्य आपने अधिकतर ब्रजभाषा में ही लिखे हैं। इनकी खड़ी बोली की कविता मधुर नहीं होने पाई।

बाबू हरिश्चन्द्र के पाण्डित्य एवं साहित्य सेवा से प्रभावित होकर भारत की कई साहित्य-संस्थाओं ने सम्मिलित रूप से आपको भारतेन्दु की उपाधि दी। जो कि साहित्य क्षेत्र में सरकार द्वारा प्रदत्त सितारे हिन्द खिताब से किसी अंश में कम नहीं है।

सरकार के बनाए हुए सितारे हिन्द के अस्त हो जाने पर भी साहित्य का यह भारतेन्दु अपनी उज्जवल ज्योत्स्ना से संसार को प्रकाशित कर रहा है। खेद है कि आप ३४ वर्ष की अल्प अवस्था ही में देवलोक पधार गए।

१—भई सखि, ये अँखियाँ बिगरैल।

> बिगरि परीं, मानति नहिं, देखें बिना साँवरो छैल।
> भई मतवारि, धरति पग डगमग, नहिं सूझति कुलगैल॥

तजिकै लाज, साज गुरुजन की, हरि की भई गुलाम।
निज प्रसाद पुनि औरहुं हरषित करति न कछु मनमैल।।
हरीचन्द, सब सग छाड़िकै, करहि रूप की सैल।।

मरम की पीर न जानै कोय।

कासों कहौं, कौन पुनि मानै, बैठि रहा घर रोय।
कोऊ जरनिन जाननि चारि, बेदरदी सब लोय।।
अपुनि कहत, सुनत नहीं मेरी, केहि समझाऊं सोय।
लोक लाज कुल की मरजादा, बैठि रही सब खोय।।
हरीचन्द ऐसे ही निभैगी, होनी होय सो होय।
। भारतेन्दुजी का सुन्दर भाव देखने को मिलता है।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण

मैथिली शरण गुप्त इस युग के प्रतिनिधि कवि हैं। आपकी कविता उच्चादर्श और पवित्रभावों से भरी हुई होती है। देशभक्ति और राष्ट्रीय भावना आपके काव्य की एक मुख्य विशेषता है। सरस्वती सम्पादक पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रोत्साहन से आपकी प्रतिभा विकसित हुई, और उन्हीं के परिमार्जन से इनकी शैली निर्मित हुई। आपकी कविता का हिन्दी संसार ने हृदय से स्वागत किया। आपकी कविताओं ने हिन्दी में एक नवीन क्रान्ति पैदा कर दी।

जीवन वृत

गुप्तजी का जन्म चिरगांव झांसी में सं० १९४३ में हुआ था। घर पर ही इनकी शिक्षा दीक्षा हुई। कविता निर्माण की प्रतिभा इनमें बचपन से ही थी। इसलिए आप बचपन में ही तुकबन्दी करने लग गए थे। आपका घराना रामभक्ति के लिए प्रसिद्ध था। आप पर भी उसका गहरा प्रभाव पड़ा। आप एक प्रतिभा शाली कवि हैं।

आपनेबड़ी कुशलता के साथ किया है। इनके छन्द बड़े हं
सुबोध रहें हैं। राष्ट्रीय जीवन का इन्हें अनुभव है। इसी ं
राष्ट्रीय भावनाओं को मार्मिक रूप में व्यक्त करने में सफ
हुए हैं।

गुप्तजी के काव्य का नमूना देखिये:—

(१)

तेरे घर के द्वार बहुत हैं, किसमें होकर आऊँ मैं।
सब द्वारों पर भीड़ पड़ी हैं, कैसे भीतर आऊँ मैं॥

(२)

निकल रही है उर से आह ताक रहे सब तेरी राह।
चातक खड़ा चोंच खोले है, संपुट खोले सीप खड़ी।
मैं अपना घट लिए खड़ा हूं, अपनी अपनी हमें पड़ी॥

(३)

सखि नील नमस्सर में उतरा, यह हंस अहा तरता तरता।
अब तारक मौक्तिक शेष नहीं, निकला जिनको चरता चरता॥

पं० रामनरेश त्रिपाठी

पण्डित रामनरेश त्रिपाठी हिन्दी के एक यशस्वी कवि हैं। देशभक्ति की जो भावना भारतेन्दु युग में चली आई थी उसे लेखनी द्वारा आपने सुन्दर रूप प्रदान किया। गांधीजी की भावनाओं का आप पर गहरा प्रभाव पड़ा है। त्रिपाठीजी एक स्वप्नदर्शी कवि हैं। पथिक, मिलन और स्वप्न ये आपके सुन्दर खण्ड काव्य हैं। आपके ये तीनों काव्य राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत हैं। त्याग और उत्सर्ग आपके इन काव्यों के आदर्श हैं। आपने भारत के प्रायः सभी भागों में भ्रमण किया है इससे इनके प्रकृतिचित्रण में स्थानगत विशेषताएँ अच्छी प्रकार से आती हैं। पथिक में दक्षिण भारत के मनोरम दृश्यों का बड़ा सुन्दर वर्णन किया गया है। आपका पथिक हिन्दी संसार में आदर की दृष्टि से देखा जाता है। पथिक की करुण स्वाभाविकता पाषाणहृदय को भी पिघला देती है। लोगों की वास्तविक दीनदशा का वर्णन करने में कवि ने कमाल कर दिया देखिए:—

खाते हैं गम और आंसुओं से ही प्यास बुझाते।
लेकर आयु विविध रोगों की हैं दिन रात बिताते।
फटे पुराने चिथड़ों से ही ढके किसी विध तन हैं।
कैसे सींए सुई तागे से भी नितान्त निर्धन हैं।

संसार के कितने कवियों ने ऐसे करुणशब्दों में दीन-दुखियों का करुणक्रन्दन उन्हीं के धन से पलने वाले अमीरों के कानों तक पहुंचाया है ? आपकी रचनाओं में निर्धनों के प्रति अगाध सहानुभूति भरी रहती है।

त्रिपाठीजी दीनों की दर्दभरी आवाज सुनते हैं—

यह व्याकुल, विकल और मनमलीन चेष्टा ही त्रिपाठीजी का आराध्यदेव है। त्रिपाठीजी की आत्मा में इन्हीं नरकङ्कालों ने कविता की छवि चमकाई। असहयोग आंदोलन के दिनों आप आगरा जिला जल में रहते गाते थे—

मैं खोजता तुझे था जब कुंज और वन में।
तू ढूंढ़ता मुझे था तब दीन के वतन में।

नरनारायण और दरिद्रनारायण को एक करने का सुंदर प्रयास इससे अधिक और कोई क्या कर सकता है। कवि के अन्तःकरण में यह विश्वव्यापी भावना इतना गहरा प्रभाव डाल चुकी है कि यह दिनरात उसे जागृत किए रहती है।

पथिक में अहिंसा की एक नवीन क्रान्ति की नवीन कल्पना की है। और उसका गहरा प्रभाव आपके ग्रन्थ में दिखाई भी देता है। आपकी भाषा में संस्कृतपदावली का सौन्दर्य दर्शनीय है। त्रिपाठीजी लोकप्रिय कवि हैं। आपने कहानी और नाटक भी लिखे हैं। अनुवाद, समालोचना तथा टीका भी लिखी है। बालोपयोगी साहित्य के निर्माण में भी आपने पूरा उद्योग किया। हिन्दी साहित्य आपके काव्य से प्रभावा नहीं बना है।

पं० माखनलाल चतुर्वेदी

पं० माखनक्ताल चतुर्वेदी एक सच्चे देश भक्त एवम् एक प्रतिभा सम्पन्न कवि हैं। आपकी प्रतिभा बहुमुखी है। कवि होने के साथ साथ एक प्रतिभा सम्पन्न लेखक हैं। राष्ट्रीयता के रङ्ग मे रंगे हुए चतुर्वेदीजी को लोग "भारतीय आत्मा" के नाम से पुकारते हैं।

जीवन वृत्त

आपका जन्म सं० १९४५ में खण्डवा नामक स्थान में हुआ था। अपने गांव में ही इनकी शिक्षा दोक्षा हुई थी। इसके बाद नार्मल परीक्षा पास करके अध्यापक हो गए। अध्यापक जीवन मे आपने अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। फिर आपने अध्यापक वृत्ति को छोड़कर पत्रकार जीवन में प्रवेश । इस समय आप कर्मवीर नामक पत्र के यशस्वी सम्पादक जो मध्यप्रदेश के खण्डवा नामक ग्राम से प्रकाशित हो रहा े केवल कवि ही नहीं वरन् राष्ट्रीय क्षेत्र के एक कर्मठ ीं हैं। राष्ट्रीय भावनाओं का उन्होंने बड़ा मर्मस्पर्शी चित्र

गया है। इनकी कविता में करुणा की मात्रा अधिक है। इनकी अनेक कविता राष्ट्रीयता के भावों से भरी पड़ी है। सुकुमारता इनके काव्य का एक श्रेष्ठ गुण है।

काव्य परिचय

आपकी कविताओं का संग्रह अभी हिमकिरीटिनी के नाम से प्रकाशित हुआ है। कृष्णार्जुन नाटक बड़ा प्रसिद्धि पा चुका है।

काव्य मिमांसा

इनकी सभी कविताएँ राष्ट्रीयता लिए हुए हैं। जैसे — [illegible]ी और कोकिल तथा हिमकिरीटिनी एवम् फूल की चाह।

आप राष्ट्रीयता के उग्रसमर्थक होने के कारण, आपको नौकरशाही के द्वारा कई बार जेल भेजा गया। परन्तु इससे आपकी राष्ट्रीयता समर्थक भावना में किसी प्रकार की न्यूनता न आने पाई। आप हमारी राष्ट्रवाणी के अमर कवि हैं। आपकी बहुत सी रचनाएँ प्रायः कारागार जीवन में ही बनीं। इसी कारण इनकी कविताओं में राष्ट्र की वेदना का सजीव चित्र अंकित हो सका है।

चतुर्वेदीजी नवीन धारा के कवियों में सबसे सरल कवि हैं। छायावाद का इनकी कविताओं पर कोई प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता। आपकी काव्य शैली [illegible] [illegible] के अनुरू-

कार्यों से सर्वथा भिन्न है। हृदय की सुकुमार वृत्तियों का जैसा सूक्ष्म विवेचन इस कवि ने किया है यह सर्वथा मौलिक है। इनकी कविताओं में राष्ट्रीयता का वह खरा रूप अंकित किया गया है। जिसे बहुत कम कवि लिखने की सामर्थ्य रखते हैं हिमकिरीटिनी पर आपको १२००) का मंगलाप्रसाद पारितोषिक भी मिल चुका है।

भाषा और शैली

आपकी भाषा ओजपूर्ण होती हुई भी सुकुमार है। शब्दं का चयन बड़ा प्रभावशाली है। अन्य भाषाओं के कितने ही शब्द आपने एक नवीन सांचे में ढ़ाल कर प्रयुक्त किये। आज भी वे इसी प्रकार शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं। उनकी रचनाओं की गति में व्याकरण खो जाती है। जिस प्रकार आप कविकर्म में कुशल हैं। उसी प्रकार आप गद्य सृजन में भी निष्णात है। आपका साहित्य देवता नामक गद्य काव्य बहुत उत्कृष्ट माना जाता है। लेखक के अतिरिक्त आप एक प्रभावशाली वक्ता भी हैं। आपकी वाणी बड़ी प्रतिभाशालिनी है। आपकी भाषा में ओज का मिठास भरा पड़ा है। आपसे हमें अभी बहुत कुछ आशा है। हमारा यह सुकुमार एवम् कर्मठ राष्ट्रकवि सर्वथा अभिनन्दन के योग्य हैं।

रक्त है या है नशों में क्षुद्र पानी।
जांच कर तू शीश दे देकर जवानी॥

(३)

लाल चेहरा है नहीं
फिर लाल किसके
लाल खून नहीं
अरे कंकाल किसके
प्रेरणा सोई कि आटादाल किसके
सिर न चढ़ पाया कि छाया भाल किसके।
नेह की वाणी कि हो आकाश वाणी।
धूल है कि जग नहीं पाई जवानी।

कविवर जयशंकरप्रसाद

महाकवि जयशङ्करप्रसाद छायावाद और रहस्यवाद के प्रथम प्रवर्त्तकों में प्रमुख हैं। द्विवेदीयुग के बाद जो नवयुग चला। वह आपसे ही प्रारम्भ हुआ। आपकी कविता की प्रमुख ३ धाराएँ हैं :—

ईश्वरोन्मुख, प्रकृति, वार्त्तानप्रेम।

आपके काव्य में प्रेम की पीड़ा अधिक दिखाई देता है प्रकृति और विरहवेदना इनके काव्य की विशेषता है आप हिन्दी के सफल कवि और श्रेष्ठ कलाकार हैं

जीवनवृत्त

प्रसाद जी का जन्म सं० १९४६ वि० में भारत के प्रसिद्ध नगर बनारस में हुआ। घर पर ही इनकी पढ़ाई हुई अध्ययन पूरा भी न होने पाया था कि इनके पिता की मृत्यु हो गई। अतः गृहस्थी का काम इन्हें संभालना पड़ा। इन्होंने संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, हिन्दी फारसी आदि की अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली थी। इसीसे आपकी योग्यता खूब बढ़ी चढ़ी थी। आपने

इतिहास संबंधी गहरा अध्ययन किया फिर उसमें कवित्व का सम्मिश्रण होने के कारण आपने नाटकों का निर्माण किया। आपके अजातशत्रु, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ, स्कन्दगुप्त और चंद्रगुप्त इत्यादि नाटकों का निर्माण किया। ये नाटक बड़े महत्त्वपूर्ण एवं नाट्यसाहित्य में युगारम्भ तथा युग परिवर्तन के सूचक हैं।

प्रसादजी ने अपनी प्रतिभा के बल पर भूतकाल के सुंदर चित्रों का चित्रण समयजनित व्यवधान को दूर करके इतना स्पष्ट कर दिया है कि उनकी बराबरी के लिए भावी नाट्यकारों को बहुतेरा प्रयत्न करना पड़ेगा।

छाया प्रतिध्वनि, आँधी और इन्द्रजाल आपके उत्तम कथा संग्रह हैं। इनमें कल्पना एवं वास्तविकता दोनों का समावेश है।

कहानी का प्रत्येक वाक्य कविता का एक टुकड़ा सा ता है।

ग्रन्थपरिचय

[, लहर, झरना, प्रेमपथिक, कामायिनी, ।

काव्य मीमांसा

इन ग्रन्थों में आपने मानवजीवन की अतृप्ति, निराशा एवं

विरह आदि का स्वर्गीय चित्र खींचा है। इनकी कवि-कल्पना पाठक को स्वप्नालोक में ले जाकर निमग्न कर देती है।

आँसू को प्रसादजी ने मानव की पीड़ा कहा है। इसीमें पीड़ा को बादल का रूप दिया गया है। आपने और प्रकृति में भी आँसू को देखकर आपने उन दोनों का मेल कर के मानव के शुष्क जीवन को सिक्त किया है। आँसू का अन्त विश्व की मंगल कामना में होता है। प्रसादजी ने इसमें कल्पना की ऊँची उड़ान तो भरी है पर उनके पैर पृथ्वी पर ही रहे हैं। कामायनी आपका एक सुन्दर महाकाव्य है। उसमें भोगप्रधान देव संस्कृति की जगह आनन्दप्रधान और लोक कल्याणमयी मानव संस्कृति की स्थापना का चित्राङ्कण किया गया है। कामायनी का विरह वर्णन बड़ा ही स्वाभाविक बन पड़ा है। दार्शनिक विचारों की भी झलक इसमें दिखलाई पड़ती है। कामायनी संपूर्ण मानवता के चिरन्तन द्वन्द्व की कथा है। इसी कारण कामायनी को सम्पूर्ण मानवता के काव्य बनाने का गौरव प्राप्त है।

भाषा और शैली

प्रसादजी की भाषा माधुर्यगुणमयी है। इन्होंने हिन्दी को मानवता की एक अनुपम कल्पना दी है। इनकी प्रत्येक पंक्ति में अपने विचार अपनी कल्पना और अपनी अनुभूति का विश्लेषण है। हिन्दी कविता की आदिकाल से चली आई

इतिहास संबंधी गहरा अध्ययन किया। फिर उसमें कवित्व का सम्मिश्रण होने के कारण आपने नाटकों का निर्माण किया। आपके अजातशत्रु, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ, स्कन्दगुप्त और चंद्रगुप्त इत्यादि नाटकों का निर्माण किया। ये नाटक बड़े महत्त्वपूर्ण एवं नाट्यसाहित्य में युगारम्भ तथा युग परिवर्तन के सूचक हैं।

प्रसादजी ने अपनी प्रतिमा के बल पर भूतकाल के सुं[illegible] चित्रों का चित्रण समयजनित व्यवधान को दूर करके इतना स्प[illegible] कर दिया है कि उनकी बराबरी के लिए भावी नाट्यकारों क[illegible] बहुतेरा प्रयत्न करना पड़ेगा।

छाया प्रतिध्वनि, आँधी और इन्द्रजाल आपके उत्त[illegible] कथा संग्रह हैं। इनमें कल्पना एवं वास्तविकता दोनों क[illegible] समावेश है।

कहानी का प्रत्येक वाक्य कविता का एक टुकड़ा स[illegible] लगता है।

ग्रन्थपरिचय

आँसू, लहर, झरना, प्रेमपथिक, कामायिनी, ।

काव्य मीमांसा

इन ग्रन्थों में आपने मानवजीवन की अतृप्ति, निराशा ए[illegible]

विरह आदि का स्वर्गीय चित्र खींचा है। इनकी कविकल्पना
पाठक को स्वप्नलोक में ले जाकर निमग्न कर देती है।

आँसू को प्रसादजी ने मानव की पीड़ा कहा है। इसीसे
पीड़ा को बादल का रूप दिया गया है। आँखों और प्रकृति में
के आँसू को देखकर आपने इन दोनों का मेल करके मानव के
एक जीवन को सिक्त किया है। आँसू का अन्त विश्व की
मंगल कामना में होता है। प्रसादजी ने इसमें कल्पना की ऊँची
उड़ान तो भरी है पर इनके पैर पृथ्वी पर ही रहे हैं। कामायिनी
आपका एक सुन्दर महाकाव्य है। इसमें भोगप्रधान देव संस्कृति
की जगह आनन्दप्रधान और लोक कल्याणमयी मानव संस्कृति
की स्थापना का चित्रांकण किया गया है। कामायिनी का विरह
वर्णन बड़ा ही स्वाभाविक बन पड़ा है। दार्शनिक विचारों की
भी झलक इसमें दिखलाई पड़ती है। कामायिनी सम्पूर्ण मानवता
के चिरन्तन द्वन्द्व की कथा है। इसी कारण कामायिनी को
सम्पूर्ण मानवता के काव्य बनाने का गौरव प्राप्त है।

भाषा और शैली

प्रसादजी की भाषा माधुर्यगुणमयी है। इन्होंने हिन्दी को
नवता की एक अनुपम कल्पना दी है। इनकी प्रत्येक पंक्ति
में अपने विचार अपनी कल्पना और अपनी अनुभूति का
विश्लेषण है। हिन्दी कविता को आदिकाल से चली आई

परम्परा से आपकी रचनाएं बिलकुल भिन्न हैं। उनके सब काव्य एक विचित्र प्रकार की मौलिकता लिए हुए हैं। उसकी मौलिकता कभी २ जटिल और दुरूह हो जाती है। इनकी भाषा गम्भीरता लिए हुए है। संस्कृत गर्भित होने के कारण माधुर्य और भी बढ़ आया है आपकी गद्यभाषा बड़ी प्रौढ़ है। और उसमें इसी कारण कहीं २ दुर्बोधता भी आजाती है। आपका शब्द-चयन बड़ाही सुन्दर है। आपका आँसू, लहर रहस्यवादी भावना से भरा पड़ा है। प्रकृति की भी बड़े सुन्दर शब्दों में व्यंजना हुई है। कल्पना की मधुर उड़ान मजबूत पंखों पर आधारित है। सम्मेलन की तरफ से आपके "कामायनी" महाकाव्य पर सं० १९९५ में १२००) रु० का मंगलाप्रसाद पारितोषिक आपके पुत्र को दिया गया। प्रसादजी ने साहित्य के रूप में मानवसमाज को जो आत्मदान दिया है वह सदा चिरनवीन बना रहेगा।

प्रसादजी अपने युग के सफल कवि, उत्कृष्ट नाटककार एवं कहानीकार हैं। हिन्दी साहित्य के भण्डार को आपने कई ग्रन्थरत्न प्रदान किये हैं। हिन्दी साहित्य को आपके ऊपर सदा गौरव रहेगा।

"प्रसाद" जी का भावसौंदर्य देखिए:—

जो घनी भूत पीड़ा थी, मस्तिक में स्मृति सी छाई।
दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आई॥

इस करुणाकलित हृदयमें, क्यों विकल रागिनी बजती।
क्यों हाहाकार स्वरों में, वेदना असीम गरजती॥
क्यों व्यथित व्योम गंगा सी, छिटकाकर दोनों छोरें।
चेतना तरंगनी मेरी, लेती है मृदुल हिलोरें॥
शशि मुख पर घूंघट डाले, अञ्चल में दीप छिपाए।
जीवन की गोधूली में, मिलने को भेंट चढ़ाए॥

२

प्रसादजी का एक शब्दचित्र देखिए-कामायनी के रूप वर्णन की एक झाँकी है।

मसृण गांधारदेश के, नील रोमवाले मेषोंके चर्म।
ढंक रहेथे उसका वपुकान्त, बनरहा था वहकोमलवर्म॥
नील परिधान बीचसुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुलाअंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ बन-बीच गुलाबीरंग॥
आह!वहमुख!पश्चिम के व्योम, बीच जबघिरतेहों घनश्याम।
अरुण रविमण्डल उनको भेद, दिखाई देता हो छविधाम॥
याकि, नव इन्द्रनील लघुशृंग, फोड़कर धधक रहीहो कान्त।
एक लघु ज्वालामुखी अचेत, माधवी रजनी में अश्रान्त॥

[इत्यालं]

श्री सियारामशरण गुप्त

सियारामशरण गुप्त हिन्दी साहित्य के अमर कलाकार हैं। उनकी काव्य शैली प्रसाद और माधुर्य गुणयुक्त है। आप कविता क्षेत्र में अपने ज्येष्ठ भ्राता मैथिलीशरण गुप्त के अनुयायी न रहकर काव्य की नवीन शैली के पथ प्रदर्शक हुए। आपकी कविताओं में कोमल भावनाओं से जिज्ञासा और सांकेतिक चमत्कार अधिक मात्रा में मिलता है। आप एक चिन्तनशील कवि हैं। गांधीजी के विचारों का उन पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ा है।

जीवन वृत्त

आप प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त के लघुभ्राता हैं। आपकी शिक्षा दीक्षा गांव की स्कूल में ही हुई। गृहस्थी का कार्य करते हुए भी आपने भाई से काव्य साहित्य का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। आपको स्वर्गीय महावीरप्रसाद द्विवेदी और प्रताप सम्पादक गणेशशङ्कर विद्यार्थी के द्वारा निरन्तर प्रोत्साहन मिलता रहा।

ग्रन्थ परिचय

आर्द्रा, विषाद, दुर्वादल, आत्मोत्सर्ग बापू तथा पाथेय
सियारामशरणजी की बड़ी सुन्दर रचनाऐं हैं।

ग्रन्थ मीमांसा

हिन्दी कविता की नवीन धारा के आप सफल कवि हैं।
का वर्णनक्रम बड़ा ही सरस है। साहित्यिकता के साथ
सिकता भी आपके पद्यों में भरी पड़ी है। आर्द्रा आपकी कथा-
क कविताओं का संग्रह है। ये कविताएँ बड़ी करुणापूर्ण हैं।
णरस के वर्णन करने में आप बड़े सफल हुए हैं। आपकी
कविताएँ हृदय में करुणा का एक स्रोत बहा देने वाली हैं।
सका असर पाठक के मस्तिष्क में हुए बिना नहीं रहता। फूल
चाह नामक कविता में एक अछूत की दारुण व्यथा का
न है। गांधीवादी भावनाओं का इस पर पूरा प्रभाव है।

विषाद में भावप्रधान कविताएँ हैं। हृदय की सूक्ष्म वृत्तियों
इसमें बड़ा प्रभावशाली वर्णन बन पड़ा है। पाथेय में कवि
हम गम्भीर विचारों को लेकर आता हुआ देखते हैं। इनकी
ारपूर्ण कवितायें आशावाद को साथ लिए हुए हैं। बड़ा
ी व्यथा के साथ नीचे जाता है, परन्तु जीवन को सरसाने
जल से भर कर हंसता हुआ ऊपर आता है। रवि बंध-

कार में पूर्ण होती है। परन्तु विहंसता हुआ बालसूर्य उसी के गर्भ में उत्पन्न होता है।

यह क्या हुआ! दीख पड़ती थी तू तो काली काली।
कहाँ छिपाए थी उस तम में यह अपूर्व उजियाली॥

बापू नामक पुस्तक आपकी एक सफल कृति है। गांधीजी के सिद्धान्त तथा विशुद्ध देश प्रेम की भावना इनकी एक प्रमुख विशेषता है। इन्होंने कविता में नाट्यरचना भी की है।

इनकी विचारधारा में एक ऐसा मिठास भरा पड़ा है जो पाठक के हृदय को निरन्तर अपनी ओर आकर्षित करता रहता है। जीवन के विभिन्न पहलुओं का इन्होंने बड़ा सूक्ष्म अध्ययन किया है। काव्यकार के अतिरिक्त ये कथाकार तथा उपन्यासकार भी हैं। मानुषी आपकी कहानियों का संग्रह है। नारी, गोद, तथा अन्तिम आकांक्षा आपके सुन्दर उपन्यास हैं।

भाषा और शैली

आपकी कवित्वशैली अत्यन्त सुबोध और सरल होते हुए भी भावनाओं को व्यक्त करने में पूर्ण समर्थ है। शब्द योजना साफ और सुलझी हुई है। भाषा, भाव और छन्द के अनुकूल अबाधगति से बहती चलती है। हिन्दी में आपने विशेष कर उन विषयों पर लेखनी चलाई जो दैनिक जीवन के समीप होते

हुए भी कवियों का ध्यान अपनी ओर नहीं खींचते ऐसे विषयों पर आपने मार्मिक प्रकाश डाला है। आपके सरस और चिन्तन-शील काव्य पर हिन्दी साहित्य को समुचित गौरव है। कविता का नमूना देखिये:—

घट

कुटिल कंकड़ों की कर्कश रज मलमल कर मेरे तन में,
किस निर्मम निर्दय ने मुझको बांधा है इस बन्धन में।
फाँसी सी है पड़ी गले में नीचे गिरता जाता हूं,
धार धार इस अन्ध कूप में इधर उधर टकराता हूं।
ऊपर नीचे तम ही तम है, बन्धन है अवलम्ब यहाँ।
यह भी नहीं समझ में आता गिरकर मैं जा रहा कहाँ।
काँप रहा हूँ, भय के मारे हुआ जा रहा हूं म्रियमाण;
ऐसे दुःखमय जीवन से हा ! किस प्रकार पाऊँ मैं त्राण?
सभी तरह हूँ विवश, करूँ क्या, नहीं दीखता एक उपाय;
यह क्या? यह तो अगमनीर है, डूबा, अब, डूबा मैं हाय।
भगवान ! हाय ! बचालो अब तो, तुम्हें पुकारूँ मैं जबतक,
हुआ तुरन्त निमग्न नीर में आर्तनाद करके तब तक।
अरे कहाँ वह गई रिक्तता, भय का भी अब पता नहीं।
गौरववान हुआ हूँ सहसा, बना रहूँ तो क्यों न यहीं ?

[विशालवें]

कविवर पन्त

सुमित्रानन्दन पन्त युगपरिवर्तन कारी कवि हैं। द्विवेदी युग में इतिवृतात्मक काव्य का निर्माण हुआ। साथही इसके बाद काव्य की शैली के प्रति विद्रोह हुआ। पर यह विद्रोह स्थूल के प्रति सूक्ष्म का था। भावों और विचारों में भी परिवर्तन हुआ। शैली और कला में भी क्रान्ति उत्पन्न हुई। छन्द का बन्धन तोड़ दिया गया। इस युग में दो प्रतिनिधि कवि हमारे सामने आते हैं। पन्त और निराला जिन्होंने छायावाद की धूम मचादी। पन्तजी ने हिन्दी के कोमल छन्दों को सुन्दर संगीत और गीत का पूर्ण ध्यान रखकर कविता का निर्माण किया।

जीवन-वृत्त

सुकुमार कवि पन्त का जन्म प्रकृति की गोद में स्थित अल्मोड़े की एक सुरम्य घाटी में हुआ। आपकी जन्म भूमि कौसानी वनस्थली के मध्य में है। प्राकृतिक सौन्दर्य ही ने इन्हें सुन्दर कल्पना दी। यह सौन्दर्य का कवि है। परन्तु सत्यं, शिवं, सुन्दर को भी साथ लिए हुए है। यह आरम्भ से ही प्रकृति

सौंदर्य पर मुग्ध थे। परन्तु चिन्तन की प्रकृति भी उनमें जागृ हुई। छोटी अवस्था ही में इन्होंने कविता लिखना आरम्भ क दिया। आपने केवल एफ. ए. तक अध्ययन किया। ये शान्ति प्रिय कवि सभा सोसाईटी से दूर रहकर लिखा करते थे। मित्र १५ वर्ष की अवस्था में हार नामक उपन्यास लिख डाला। पन्त जी चिन्तनशील व्यक्ति हैं।

ग्रन्थ परिचय

वीणा, ग्रन्थि, पल्लव, गुञ्जन, ज्योत्स्ना, युगान्त, युगवाणी ग्राम्या, आपकी कृतियां हैं।

काव्य मीमांसा

कवि की प्रथम रचना वीणा है। यह आपकी आरम्भिक कविताओं का संग्रह है। इन कविताओं मे वालकवि उड़ने के लिए पंख फड़ फड़ा रहा है। ये कविताऐं अधिकांश में प्रार्थना के रूप मे हैं। इन सभी कृतियों मे कवि की विश्व प्रेम की झलक है। वीणा भावना प्रधान है। भाषा संकेतात्मक और प्राञ्जल है।

पंतजी की दूसरी रचना ग्रन्थि है। ग्रन्थि एक प्रेम कहानी है। प्रेमी नायक की नौका सन्ध्या समय एक ताल में डूब गई। नायक सन्ध्या सौन्दर्य मे इतना तन्मय था कि उसे इसका बोध ही नहीं हुआ। थोड़ी देर के बाद उसकी आंखे खुली। और उसने अपने

को मालिका के सामने देखा। नायक ने उसमें प्रणय की छ या देखी। दोनों प्रेम पाश में बंधे। परंतु समाज ने उन्हें स्वीकृत नहीं किया। नायका का ग्रन्थि बन्धन किसी दूसरे व्यक्ति के साथ हो जाता है। बस कहानी यहीं प्राण तोड़ देती है। अभागा नायक वेदना की शरण मे चला जाता है।

पल्लव में पन्तजी का निखरा हुआ रूप सामने आ ता है। पल्लव में कला और सौन्दर्य का बड़ा प्राधान्य है। पन्तजी ने मानव जीवन की अपूर्णता को अपनी कल्पना के माधुर्य मे पूरा करने की चेष्टा की है। युगवाणी मे कवि ने जीवन के अभावों को दिखाकर उन्हें पूरा करने की ओर संकेत किया है। पन्तजी की कवित्व शक्ति सौन्दर्य भावना को साथ लेकर चलती है। विश्व चिन्तन और दार्शनिक विचारों का भी उसमे समावेश है। यह दार्शनिकता गुञ्जन और युगान्त में बढ़ गई है। गुञ्जन का कवि जीवन में सौन्दर्य देखता है। और जीवन के उल्लास से वह मिलने के लिए उत्सुक है। पन्तजी की कवित्वशक्ति विचारशील है। पहले वे प्रकृति के सौन्दर्य में जीवन के सुखोंदुःखों को भूलना चाहते थे। धीरे धीरे उनकी कविता ईश्वरोन्मुख होने लगी। कल्पना की दुनियां को छोड़कर वे कठोर जीवन की रूपरेखा चित्रित करने लगे और मानवतावादिता की ओर बढ़े। युगवाणी में उनकी यही भावना व्यक्त हुई है। देखिए:—

[निम्नावर्ते]

सुन्दर है विहग सुमन सुन्दर,
मानव तुम सब से सुन्दरतम।

युगवाणी जहाँ नारी स्वातन्त्र्य का सन्देश सुनाती है। वहाँ वह साम्यवाद के स्वरों से भी पूर्ण रूप से प्रभावित है। परन्तु उदरपूर्ति के साधनों के साथ उसमें आध्यात्मिकता का स्वर प्रमुख है।

ग्राम्या में कवि ने गाँवों का चित्रण किया है। उन्होंने उसकी दीन, हीन अवस्था का एक सकरुण चित्र खींचा है। उनका कहना है" मैंने ग्राम जनता को रक्त मांस के जीवों के रूप में नहीं देखा है। एक ह्रासोन्मुखी संस्कृति के अवयव स्वरूप देखा है। रूढ़ियों के शिकार होते हुए भी बीमार आदमियों की भाँति हमारी भावुकतापूर्ण शान्ति के पात्र हैं।

भाषा और शैली

पन्तजी के काव्य में माधुर्य और सौन्दर्य है। इनका शब्द चयन बहुत ही सुन्दर है। आपकी कल्पना की उड़ान बड़ी ही मनोहर है। आज कल पन्तजी छायावाद से हट कर प्रगतिवाद की ओर अग्रसर हो रहे हैं। हिन्दी के लिए यह शुभलक्षण है।

(१)

तड़ित सा समुखि तुम्हारा ध्यान।
प्रभा के पलक मार उर चीर।

गूढ़ गर्जन कर जब गम्भीर।
मुझे करता है अधिक अधीर।
जुगनुओं में उड़ मेरे प्राण।
खोजते हैं तब तुम्हें निदान।
पूर्वसुधि सहसा जब सुकुमारि।
सरल शुक सी सुखकर सुर मे।
तुम्हारी भोली बातें।
कभी दुहराती है उर में।

(२)

वन की सूनी डाली पर
सीखा कलि ने मुसकाना।
मैं सीख न पाया अब तक,
सुख में दुःख को अपनाना
काटों से कुटिल भरी हो
यह जटिल जगत की डाली
इसमें ही तो जीवन के
पल्लव की फूटी लाली

———

[एकसौ एक]

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

निरालाजी हिन्दी कविता की नवीनधारा के कवि हैं। छायावादी कवियों में आपका एक विशिष्ट स्थान है। रहस्यवाद आपकी कविता का मेरुदण्ड है ऐसा आलोचकों का कथन है। निराला ने लय और ताल के आधार पर स्वच्छन्द छन्दों की रचना की। आप में बुद्धिवाद और हृदयवाद दोनों का सुन्दर समन्वय है।

जीवनवृत्त

निरालाजी का जन्म सं० १६५५ में हुआ। आपने दर्शनशास्त्र का अच्छा अध्ययन किया। संगीत का भी आपने अच्छा अभ्यास किया। बाल्यकाल से आपकी प्रवृत्ति कविता प्रणयन की ओर थी।

ग्रन्थपरिचय

परिमल, अनामिका, गीतिका, तुलसीदास।

काव्य मीमांसा

निरालाजी हिन्दी साहित्य में नवीनशैली के निर्माता हैं।

आपकी कल्पना उड़ते हुए पक्षी की भाँति स्वतंत्र रही है। आपकी रचना में ओजगुण अधिक पाया जाता है। इसीलिए कई आलोचकों ने आपको पौरुष प्रतिपादक कवि कहा है। आपकी कविताओं में स्थान २ पर दार्शनिक विचार पाए जाते हैं। अलका, अप्सरा और निरुपमा आपके सुन्दर उपन्यास हैं। कहानी और उपन्यास की दिशा मे आप पर यथार्थवाद की छाप पड़ी हुई दृष्टिगत होती है। भावों के अधिक प्रवाहों के कारण आपके निबंधों मे कभी २ असंबद्धता तथा उन्मत्तता दृष्टिगोचर होती है। आपने मुक्तक छन्द की कविता का आरम्भ कर हिन्दी साहित्य मे बड़ी हलचल मचा दी थी।

परिमल आपका प्रथम ग्रंथ है। इसमें करुणा, प्रेम तथा [illegible]रप्रधान कविताओं का संग्रह है। इसकी भाषा बडी ओज-[illegible]र्ण है।

गीतिका आपका एक सुन्दर गीतिकाव्य है। इसमे साहित्य [illegible]र संगीत दोनों को मिलाने का उपक्रम किया गया है। [illegible]रालाजी आर्य संस्कृति के बड़े भक्त हैं। इनका तुलसीदास [illegible]का बड़ा अच्छा उदाहरण है।

भाषा और शैली

निरालाजी की भाषा सस्कृतगर्भित है किन्तु कहीं २ उसमें [illegible]र्बी और फारसी के भी शब्द आ जाते हैं। इनका काव्य

ओजप्रधान है। कुछ समालोचकों का कहना है कि आपकी भाषा गीतों के बिलकुल उपयुक्त नहीं। आपकी अलंकार योजना बड़ी स्वाभाविक है। सचमुच आपने खड़ीबोली में एक नए सौन्दर्य की सृष्टि की। आज उनकी शैली का नवीन कवि अनुगामन करते हैं यह आपकी भाषा और शैली की सफलता का एक उज्ज्वल उदाहरण है। आपने एक भिखारी का बड़ा ही करुणाजनक चित्र खींचा है। देखिए—

वह आता—

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ है दोनों मिलकर एक,
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठी भरदाने की भूख मिटाने को,
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।

श्रीमती महादेवी वर्मा

श्रीमती महादेवी वर्मा हिन्दी की कवयित्रियों में अपना सर्वोच्च स्थान रखती हैं। मीरा की अन्तर्व्यथा वास्तविक थी। वह भक्ति-युग की नारी थी परन्तु महादेवी वर्मा बुद्धियुग की नारी हैं। इतना होने पर भी इनमें भावुकता की कमी नहीं है।

जीवन वृत्त

महादेवीजी का जन्म फर्रुखाबाद में सं० १९६४ विक्रम में हुआ। शैशव में आपकी शिक्षा इन्दौर में हुई फिर प्रयाग में हुई। ११ वर्ष की अवस्था में आपका विवाह डाक्टर स्वरूपनारायण वर्मा के साथ हुआ। आपके मातापिता स्त्री जाति की उच्च शिक्षा के बड़े पक्षपाती थे। अतएव विवाह होने के बाद भी अध्ययन क्रम चालू रहा। सं० १९८५ में आपने संस्कृत और दर्शन जैसे गहन तथा महत्त्वपूर्ण विषयों को लेकर B. A परीक्षा पास की। इस समय आप प्रयागमहिला विद्यापीठ की प्रधानाध्यापिका के पद पर सुशोभित हैं। अध्यापन कार्य करते समय आपने प्रयाग से प्रकाशित होने वाले प्रसिद्ध मासिक पत्र "चाँद" का दो वर्षों तक सम्पादन किया। महादेवीजी में काव्य निर्माण की शक्ति

बाल्यकाल में ही थी उसे आपने मनन एवं अध्ययन के द्वारा और भी परिष्कृत एवं परिवर्द्धित किया।

ग्रन्थ परिचय

आपकी प्रमुख रचनाएँ ये हैं:—

नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्यगीत, यामा और दीपशिखा।

ग्रन्थ मीमांसा

पीड़ा एवं वेदना उनकी कविता की सर्वोच्च विशेषता है। उनके हृदय की झंकार हमें उनकी कविता में सुनाई पड़ती है। सुकुमारता और कोमलता के साथ २ वह हृदय के अन्तर्द्वन्द्व का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करती हैं। आपके गीतों में एक विचित्र प्रकार का दर्द भरा पड़ा है। जो पाठक के हृदय में एक मरम धारा बहाता है। छायावाद के साथ २ रहस्यवाद का इन्होंने सुन्दर चित्राङ्कण किया है। देवीजी अपने हृदय को पीड़ा का केन्द्र मानती हैं। इसी कारण उनके हृदय से तृष्णा, व्यथा और टीस निकलती है। आपने ग्रामों में प्रचलित लोकगीतों में नवजीवन फूँक दिया है। उनकी मनोव्यथा का शब्दचित्र देखिए—

मैं नीरभरी दुख की बदली, विस्तृत नभ का कोई कोना।
मेरा न कभी अपना होना, परिचय इतना इतिहास यही!

❀ श्रीमती महादेवी वर्मा ❀

उमड़ी कल थी मिट आज चली

अपनी इस कमनीय दामन में उन्हें तृप्ति नहीं। कठोर साधना से यह अपने त्याग को एक सुन्दर रूप दे देती हैं। इनके संपूर्ण काव्य में इनके अन्तःकरण की स्फूर्ति और इनकी भावना का आनन्द छाया हुआ है सभी ये गाती हैं —

नित में हूँ अभी सुहाग भरी, प्रिय के अनन्त अनुरागभरी।

आत्मा और परमात्मा की इन्होंने बड़ी मार्मिक व्याख्या की है। सचमुच इनके काव्य का रहस्यवाद ही प्राण है। महादेवीजी की कविता का विषय मूर्त न होकर अमूर्त है। स्थूल न होकर सूक्ष्म है। आपने संसार को अभावमय एवं वेदनामय माना है। अभाव और वेदना के कारण जीव ईश्वर से पृथक हो जाता है। माया और मोह दोनों के बीच में एक बड़ा भारी फासला उपस्थित कर देते हैं। उसी बिछुड़े हुए परमात्मा को पाने को कवियित्री की आत्मा विकल है। साहित्य की दृष्टि से इनके गीत विप्रलम्भ शृङ्गार के अन्तर्गत हैं। आपकी परिमार्जित भाषा में खड़ीबोली के गीत बड़े सुन्दर बन पड़े हैं। इन दिनों आपके गीतों का प्रचार बहुत हुआ। आधुनिक हिन्दी कविता आप गीतों से विशेषतया प्रभावित हुई है। आरम्भ में आप राष्ट्रीय जागृति के गीत लिखती थीं। इसके बाद इनकी समस्त रचनाओं से विषाद की एक गहरी छाया दिखाई पड़ती है। आपकी नीहार में

छवि को वह हृदयङ्गम करना चाहती है। और जब तक वह यह न कर सकेगी तब तक उसका अनुप्र[illegible] पत्र पर पत्र लिखता चला जायगा।

देवीजी का भावपूर्ण चित्र देखिए —

इन्द्रधनु में नित सजी सी
विधु हीरक में जड़ी सी।
मैं भरी बदली रहूँ
चिर मुक्ति का सम्मान कैसा

युग युगान्तर की पथिक मैं छू कभी लूँ छाँह तेरी।
ले फिरूँ सुधि दीप सी फिर राह में अपनी अँधेरी।

लौटता लघु पल न देखा
नित नए क्षण रूप रेखा
चिर बटोही मैं मुझे
चिर पंगुता का दान कैसा

श्रीयुत् रामकुमार वर्मा

श्रीयुत रामकुमार वर्मा वर्तमान युग के काव्यकारों में अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। इनकी रचना में रहस्यवाद स्वाभाविक रूप से रहता है। कबीर की आध्यात्मिक वाणी का गहरा अध्ययन और मनन करने के कारण इनके रहस्यवाद में और भी प्रौढ़ता आ गई है। छायावादी युग में रहस्यवादी भावनाओं का जो अंश मिलता है। उसे प्रवेश कराने का श्रेय आपको ही है। आत्मा और परमात्मा के एकत्व की ओर कवि सङ्केत करता है।

जीवन वृत्त

रामकुमार वर्मा का जन्म सं० १९६२ विक्रम में हुआ। आपकी माता विदुषी महिला थी। आरम्भिक शिक्षा आपने उनकी देखरेख में ही पाई। इसके बाद ये स्कूल में भर्ती हुए। सन् १९२७ ई० में आपने हिन्दी लेकर एम० ए० पास किया। उसी वर्ष आप प्रयाग विश्वविद्यालय के व्याख्याता के पद पर नियुक्त हुए। कविता निर्माण की ओर आपकी प्रवृत्ति मातृगुण होने के कारण शैशव से ही थी। १७ वर्ष की अवस्था में आपकी

आपके एकांकी नाटकों का संग्रह "रेशमी टाई" तथा "पृथ्वीराज की आँखें" नाम से प्रकाशित हो चुके हैं।

आपकी कविता में पन्त की सी सुकुमारता तो नहीं मिलती। पर आपका प्रकृतिचित्रण भी मार्मिकता लिए हुए है। प्रकृति को आपने जड़ नहीं चेतन माना है। आपकी कल्पना उच्च है एवम् अनुभूति के स्पर्श से वह एक आनन्दसागर बन गई है। परिष्कृत शृंगार का यह कवि हमारे जीवन के अक्षय तथ्यों का अनन्य चित्रकार है।

वर्माजी ने इतिहास के पुरातन दृश्यों को अपनी कल्पना के द्वारा सरस एवम् सजीव बनाकर इस प्रकार चित्रित किया है कि लोग उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। हिन्दी साहित्य को आप अभी बहुत कुछ देंगे। ऐसी हमें आशा है :—
श्रीयुत रामकुमारजी का भाषासौष्ठव देखिए :—

एक दीपक किरणकण हूँ।

धूम्र जिसके क्रोड़ में है, उस अनल का हाथ हूँ मैं।
नवप्रभा लेकर चला हूँ, पर जलन के साथ हूँ मैं।
सिद्धि पाकर भी तपस्या साधना का ज्वलित क्षण हूँ॥
व्योम के उर में अगाध भरा हुआ है जो अँधेरा।
और जिसने विश्व का प्रत्येक कण सौ बार घेरा॥

सूर और तुलसी

वर्षों के वर्ष बीत गए। परन्तु आज भी संस्कृत भाषा कालिदास, माघ और भवभूति के गुण गाती हुई नजर आती है। इसी प्रकार हिन्दी भाषा भी चाहे कितनी ही उन्नत हो जाय इसमें सर्वाङ्गीणता का पूर्ण समावेश हो जाय। चाहे उसका क्षेत्र दृष्टि सीमा के क्षेत्र को लांघ जाय, परन्तु फिर भी वह सूर और तुलसी ही की भाषा कहलाएगी। यह युगल जोड़ी हिन्दी के साहित्याकाश के सूर्य और चन्द्रमा हैं।

ये दोनो हिन्दी भाषा के महाकवि हैं। इन दोनों महाकवियों का अपना अपना स्थान है। अतः इनमे से कौन बड़ा और कौन छोटा है इस प्रश्न को उठाना अनुचित ही ज्ञात होता है। किसी क्षेत्र मे सूर आगे है तो किसी मे तुलसी। सूर की अपेक्षा तुलसी का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। सूरदासजी ने कृष्ण के केवल बाल्य-जीवन का वर्णन किया है। लेकिन वह वर्णन बड़ा विशद और स्वाभाविकता लिए हुए है।

इस क्षेत्र में सूरदासजी का मुकाबला करने वाला कवि हिन्दी

मैया कबहुं बढ़ैगी चोटी।
कितिक बार मोहि दूध पियत भई यह अजहूँ है छोटी।
काचो दूध पियत मोहि पचि पचि, देत न माखन रोटी।

बाल सुलभ भावों का बड़ा सरस और सुबोध वर्णन क
पड़ा है। तुलसीदासजी ने बाल वर्णन खूब किया है परन्
उनमें स्वाभाविकता का क्षीण सा पड़ा है। बालकों की मी
मधुर वाणी का उसमें मिठास नहीं। तुलसीदासजी का बाल
वर्णन पढ़ते हैं तब ऐसा प्रतीत होता है कि बालकों के पीछे
तुलसीदासजी बोल रहे हैं। तुलसीदासजी का बालवर्ण
देखिए:—

कबहूँ ससि मांगत आरि करैं, कबहूँ प्रतिबिम्ब निहारी डरैं।
कबहूँ कर ताल बजाइ के नाचत, मातु सबै मन मोद भरैं।
कबहुं रिसि आई कहैं हठि कै, पुनि लेत सोइ जेहि लागि अरैं।
अवधेश के बालक चारि सदा, तुलसी मन मन्दिर मे बिहरैं।

[पच्चीस सोलह]

और किसी पुस्तक का नहीं। घास फूस के भोपड़ों से लेकर बड़े २ राज प्रासादों तक इसकी पहुंच है। राम का चरित्र विश्व के सामने एक अनूठा मार्ग दिखाता है। रामचरित मानस दोहा चौपाई पद्धति में लिखा गया है। विनय पत्रिका, गीतावली, कृष्ण गीतावली पार्वती मंगल तथा जानकी मंगल आपके सुन्दर ग्रन्थ हैं। ये सब गीत पद्धति में लिखे गए हैं।

तुलसीदास जी ने सभी रसों में रचना की है। सूर का केवल गीत पद्धति पर ही अधिकार था। किन्तु तुलसी ने सभी प्रचलित पद्धतियों से काव्य सृजन किया। सूर केवल ब्रजभाषा के ही विद्वान थे। अवधी भाषा में उनकी गति नहीं थी। तुलसीदास जी ब्रजभाषा, अवधी और संस्कृत तीनों भाषाओं के पारङ्गत विद्वान थे।

इस प्रकार निष्पक्ष आलोचना के दृष्टिकोण से विचार करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि जहां तुलसीदास जी सूरदास जी से बहुत सी बातों में आगे हैं। वहां सूर भी कई बातों में तुलसी से श्रेष्ठ है।

भक्तिभावना दोनों में एक जैसी है। एक भगवान श्रीराम के भक्त है तो दूसरा श्री कृष्ण का उपासक। शुद्ध कवित्व की दृष्टि से दोनों कवि बराबर ठहरते हैं। अतः इन दोनों में छोटा बड़ा मानकर इन्हें हिन्दी साहित्य के सूर्य और चन्द्रमा मानना ही ठी

है। सूर्य और चन्द्रमा में हम किसी एक को छोटा या बड़ा नहीं कह सकते। अपने अपने स्थान पर दोनों को महत्व है। सूर्य से यदि दिन की शोभा है तो चन्द्रमा से रात्रि की। दोनों महाकवियों की कविताएँ उन शाश्वत सिद्धान्तों को लिए हुए हैं। जो प्रत्येक युग के मानवों मे बीज रूप से वर्तमान रहते हैं। इसी से उनके काव्य चिर नवीनता धारण किए हुए हैं।

गुरु जी थे हिन्दी के [illegible] । कवित्व शक्ति और प्रतिभा [illegible] प्रचुर मात्रा में थी, पर इनके अनुप्रास प्रेम में इनकी रुचि-विशेष प्रायः बाधक हुई । कभी २ वे कुछ बड़े और पेचीदे मजमून का हौसला बांधते थे । पर अनुप्रास के आडम्बर की रुचि बीच में उनका छन्द भंग करके सारे पद्य को कीचड़ में फँसा छकड़ा बना देती थी । भाषा में स्निग्ध प्रवाह न आने का एक कारण यह भी था । इनकी भाषा में सार्द्रता और चलतापन कम पाया जाता है । कहीं कहीं शब्दव्यय बहुत अधिक है और अर्थ बहुत स्वल्प ।"

"अक्षरमैत्री के हिसाब से इन्हें कहीं २ अशक्त शब्द रखने पड़ते थे, जो एक ओर तो भद्दी तड़क भड़क दिखाते थे और दूसरी ओर अर्थ को आच्छन्न करते थे। तुकांत और अनुप्रास के लिए ये कहीं २ शब्दों को ही तोड़ते मरोड़ते न थे बल्कि

वाक्य को भी अधिक अविन्यस्त कर देते थे। जहाँ अभिप्रेत भाव का निर्वाह पूरी तरह से हो पाया है या जहाँ उसमें कम बाधा पड़ी है वहाँ की रचना बहुत ही सरस हुई है। रीतिकाल के कवियों में ये बड़े प्रगल्भ और प्रतिभा सम्पन्न कवि थे इसमें संदेह नहीं। इस काल के कवियों में इनका विशेष गौरवशाली स्थान है। कहीं २ इनकी कल्पना बहुत सूक्ष्म और दूरारूढ़ है।"

बिहारी की भाषा बड़ी शुद्ध एवम् परिमार्जित है। देवकी अपेक्षा वह अधिक सुघड़ है। बिहारी ने शब्दों को तोड़ा मरोड़ा नहीं है इसी से उसके काव्य में एक विचित्र प्रकार का आनन्द-दायक रस उत्पन्न हो गया है। बिहारी की भाषा चलती हुई और साहित्यिक है। उसकी वाक्य रचना एवम् शब्द चयन बड़ा ही सुन्दर है। देव ने शब्दों को बड़ा अंगभङ्ग किया है। इसी से उनके काव्य में विशेष दुरूहता आ गई है।

देव और बिहारी दोनों शृंगारी कवि हैं। दोनों अपने २ क्षेत्र में पूरे हैं। यदि देव अपनी अनुप्रासमयी भाषा में संयोग शृंगार का सजीव वर्णन करके पाठकों को आनन्द सागर में निमग्न करने की शक्ति रखता है तो बिहारी अपनी सारगर्भित भाषा द्वारा वियोग शृंगार की कारुण्यधारा से पाठक के कोमल हृदय को पिघला देने की क्षमता रखता है। वैसे देव का वियोग

वर्णन में, अच्छा है तो विहारी का संयोग वर्णन भी सजीव है। कल्पना की ऊँची उड़ान विहारी की अपनी विशेषता है। उनका वर्णन कहीं औचित्य की सीमा पार कर जाता है।

> इत आवत चलि जात उत, चली छसातक हाथ।
> चढ़ी हिंडोले सी रहै, लगि उसासन साथ॥
> पत्राही तिथि पाइए वा घर के चहुँ पास।
> नित प्रति पून्यौं ही रहै, आनन ओप उजास॥

विहारी की कविता में अलङ्कारों का विशेष महत्त्व नहीं, वे कृत्रिम सौंदर्य को नहीं चाहते। इसी से जहाँ कहीं उन्होंने अलङ्कारों का प्रयोग किया है वहाँ वे अलङ्कार स्वाभाविक सौंदर्य के आगे छविहीन पड़ गए हैं। देव ने सलङ्कार नायिकाओं का वर्णन अधिक किया है। मानवीय प्रकृति का सूक्ष्म विवेचन करने में विहारी को जो सफलता मिली है, उतनी हिन्दी भाषा के अन्य किसी कवि को नहीं मिली। व्यापक भ्रमण ज्ञान होने के कारण देव की दृष्टि चारों ओर बहुत दूर तक जाती है। परन्तु विहारी के बराबर गहरी नहीं। इसी से मिश्रबन्धुओं ने महाकवि विहारी के विषय में ये भाव प्रगट किए हैं।

"जाको पैनी दीठि की मिलत न कहूँ मिसाल।"

यह वस्तुतः ठीक ही है। देव विहारी में इस क्षेत्र में पीछे रह जाता है. परन्तु साथ ही देव ने काव्यांगों का इतना सूक्ष्म और

वाक्य को भी अधिक अविन्यस्त कर देते थे। जहाँ अभिप्रेत भाव का निर्वाह पूरी तरह से हो पाया है या जहाँ उसमें कम बाधा पड़ी है वहाँ की रचना बहुत ही सरस हुई है। रीतिकाल के कवियों में ये बड़े प्रगल्भ और प्रतिभा सम्पन्न कवि थे इसमें संदेह नहीं। इस काल के कवियों में इनका विशेष गौरवशाली स्थान है। कहीं २ इनकी कल्पना बहुत सूक्ष्म और दूरारूढ़ है।"

बिहारी की भाषा बड़ी शुद्ध एवम् परिमार्जित है। देवकी अपेक्षा वह अधिक सुघड़ है। बिहारी ने शब्दों को तोड़ा मरोड़ा नहीं है इसी से उसके काव्य में एक विचित्र प्रकार का आनन्द-दायक रस उत्पन्न हो गया है। बिहारी की भाषा चलती हु और साहित्यिक है। उसकी वाक्य रचना एवम् शब्द चयन बड़ ही सुन्दर है। देव ने शब्दों को बड़ा अंगभङ्ग किया है। इसं से उनके काव्य में विशेष दुरूहता आ गई है।

देव और बिहारी दोनों शृंगारी कवि हैं। दोनों अपने २ क्षेत्र मे पूरे हैं। यदि देव अपनी अनुप्रासमयी भाषा में संयोग शृंगार का सजीव वर्णन करके पाठकों को आनन्द सागर में निमग्न करने की शक्ति रखता है तो बिहारी अपनी सारगर्भित भाषा द्वारा वियोग शृंगार की कारुण्यधारा से पाठक के कोमल हृदय को पिघला देने की क्षमता रखता है। वैसे देव का वियोग

वर्णन में अच्छा है तो बिहारी का संयोग वर्णन भी सजीव है। कल्पना की ऊँची उड़ान बिहारी की अपनी विशेषता है। उनका वर्णन कहीं औचित्य की सीमा पार कर जाता है।

इत आवत चलि जात उत, चली छसातक हाथ।
चढ़ी हिंडोले सी रहै, लगि उसासन साथ॥
पत्राही तिथि पाइए वा घर के चहुँ पास।
नित प्रति पून्यौ ही रहै, आनन ओप उजास॥

बिहारी की कविता में अलङ्कारों का विशेष महत्त्व नहीं, वे कृत्रिम सौंदर्य को नहीं चाहते। इसी से जहाँ कहीं उन्होंने अलङ्कारों का प्रयोग किया है वहाँ वे अलङ्कार स्वाभाविक सौंदर्य के आगे छविहीन पड़ गए हैं। देव ने स लङ्कार नायिकाओं का वर्णन अधिक किया है। मानवीय प्रकृति का सूक्ष्म विवेचन करने में बिहारी को जो सफलता मिली है, उतनी हिन्दी भाषा के अन्य किसी कवि को नहीं मिली। व्यापक भ्रमण ज्ञान होने के कारण देव की दृष्टि चारों ओर बहुत दूर तक जाती है। परन्तु बिहारी के बराबर गहरी नहीं। इसी से मिश्रबन्धुओं ने महाकवि बिहारी के विषय में ये भाव प्रगट किए हैं।

"जाकी पैनी दीठि की मिलत न कहूँ मिसाल।"

यह वस्तुतः ठीक ही है। देव बिहरी से इन क्षेत्र में पीछे रह जाता है परन्तु साथ ही देव ने काव्यांगों का इतना सूक्ष्म और

मार्मिक विश्लेषण किया है, कि बिहारी से बढ़ा रीति काल का कोई भी कवि उसके टक्कर में ठहर नहीं सकता। देव में सुन्दर उदाहरण केशव और मतिराम भी न दे सकें।

देव ने भक्ति, ज्ञान और वैराग्य आदि विषयों पर खूब लेखनी चलाई है। बिहारी ने आध्यात्मिक विषयों का इतने व्यापक रूप से वर्णन नहीं किया। देव ने घनाक्षरी और सवैयों में काव्यनिर्माण किया है और बिहारी ने दोहे में। दोनों ही छंदों की अपनी २ विशेषताएँ हैं।

दोनों महाकवि हिन्दी भाषा के अनुपम रत्न हैं। अनुपम रत्नों में किसको छोटा कहें और किसे बड़ा। प० कृष्णबिहारी मिश्र के शब्दों में यही कहते बनता है कि बिहारीलाल की कविता यदि जुही या चमेली का फूल है तो देव की कविता गुलाब या कमल का फूल। दोनों में सुवास है। भिन्न २ लोग भिन्न २ सुगंध के प्रेमी हैं।

स्फुट कविगण

हिन्दी काव्यधारा का समुचित विकास और विस्तार करने
हजारों काव्यकारों का समुचित सहयोग रहा है। उनके व्यापक
त्न से ही हिन्दी को यह वर्तमान गौरव प्राप्त हुआ है। उन सब
का परिचय देना इस ग्रन्थ की सीमा एवं लेखक की शक्ति के
बाहर है। सभी ने अपनी योग्यतानुसार माँ भारती की अर्चना की
। उनमें से कुछ प्रमुख कवियों के नाम ये हैं।

श्रीधर पाठक—आपने काश्मीर सुषमा, ऊजड़ गाँव तथा भारत
गीत आदि काव्य लिखे। आपने प्रकृतिवर्णन के साथ इसमें
राष्ट्रीयता की भी झलक दिखाई है।

गुरुभक्त सिंह—आपने नूरजहाँ नामक एक प्रबन्ध काव्य
लिखा है यह बहुत ही सरस एवं सुन्दर है

सुभद्रा कुमारी चौहान—आपकी कविताएँ अधिकांशत: राष्ट्रीय
झाँसी की रानी" नामक कविता ने बहुत प्रसिद्धि पाई है। मुकुल
नाम से आपकी कविताओं का संग्रह प्रकाशित हुआ है

[पृष्ठ देखिए]

श्रीनरेन्द्र एम.ए.—आजकल नवयुवक कवियों में आपका ऊँचा स्थान है "शूलफूल" "कर्णफूल" "प्रभातफेरी" "प्रवासी के गीत" तथा "पलाशवन के" नाम से आपके पद्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

श्रीयुक्त पवन—"मधुशाला, में धुपाला",

श्रीरामधारीसिंह "दिनकर"—दिनकरजी प्रगतिवादी हैं। "रेणुका" "हुङ्कार" तथा "रसवन्ती" आपकी कविताओं के सुन्दर संग्रह हैं। आपके काव्य में देशप्रेम की भावना का प्राचुर्य है।

श्रीअनूप शर्मा—"प्रियप्रवास" की तरह आपने भी संस्कृत छन्दों में "सिद्धार्थ" नामक एक प्रबन्ध काव्य लिखा है। यह मौलिक काव्य ग्रंथ है।

श्रीउदयशङ्कर भट्ट—"राका" आपका पद्य संग्रह है। "तक्षशिला" नामक एक आपका प्रबन्ध काव्य भी प्रकाशित हो चुका है।

श्रीहरिकृष्ण प्रेमी—"आँखों" में "जादूगरनी" "अनंत के पथ पर" "स्वर्ण विहान" तथा "अग्निगान" आपके मनोहर कविता

[illegible]

[illegible] *नेपाली*—आपकी "पीपल" "हरी घास" आदि [illegible] सुंदर है। आपका "नवीन" नामक काव्य संग्रह

अभी प्रकाशित हुआ है। प्राकृतिक कविताएँ आपने खूब लिखी हैं।

श्रीमोहनलाल द्विवेदी—प्रथम तो आप बच्चों के लिए कविताएं लिखते थे, पर अब आप राष्ट्रीय कवि के रूप में दिखाई देते हैं। "भैरवी" "वासवदत्ता" आपकी कविताओं के संग्रह हैं। "कुणाल" नामक एक काव्य भी आपने लिखा है।

आरसीप्रसादसिंह—आपके "कलेजे के टुकड़े" "कपाली" "आरसी" आदि कविता संग्रह हैं।

श्री अनुज साहित्यरत्न—आप राजस्थान के तरुण कवि हैं। प्रगतिवादी भावनाओं से प्रभावित होते हुए भी आप राष्ट्रीय भावों के गायक हैं। आपकी कविताओं का संग्रह "प्रभात वेला" के नाम से प्रकाशित हुआ है।

श्री मुकुल साहित्यरत्न—राजस्थान का यह तरुण कवि भारत का सुविख्यात कवि हो चला है। आपकी कविताएँ बड़ी लोकप्रिय हैं। अभी काव्य प्रकाश में नहीं आया।

श्री भरत व्यास—आप राजस्थान के एक लोकप्रिय कवि हैं। आपकी कविताओं का संग्रह 'मरुधरा' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुआ है। आप गीत लिखने में कुशल हैं।

[एकसौ सत्ताईस]

श्री कन्हैयालाल सेठिया—'वनफूल' आपकी सुन्दर कविताओं का संग्रह है। राजस्थान का यह उदीयमान कवि बहुत कुछ लिखने जा रहा है।

श्री शंभुदयाल सक्सेना—आप बीकानेर के एक प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। आपका बाल-साहित्य बड़ा रोचक है। काव्यालोचन आपका एक उत्तम ग्रन्थ है। आपकी कविताओं का संग्रह 'रैन बसेरा' में प्रकाशित हुआ है।